

209
Pinda vidli.
Hiveta

आम कदमि
2270 I

ॐ नमः शिवाय ॥ तत्पाकुडु क्रिने सचक्रो वारयय विधि ॥ ॥
 वसपे विधि ॥ घतवासन मंगल बोय भूतय कुंभतय ॥
 महापात्रतय ॥ ध्यते अग्रस ॥ अर्घ पात्रतय ॥ दंडुवहित
 य ॥ ध्यते वसपे ॥ ॥ त्रिरत्नम ॥ सूर्यार्घ ॥ कुल माने पू
 जा ॥ ध्यते अग्रस ॥ केवोऽवतयाव ॥ गुरुनमस्कार सुमर
 रापूजा ॥ गुरुनमस्काराय ॥ न्यासवती सि ॥ जलपा

त्र ॥ गायत्री ॥ अर्घ पात्र पूजा ॥ भूतश्रद्धि ॥ आत्मपूजा ॥
 श्रीसवर्त्तन ॥ आवाहनादि ॥ त्रिदेव ॥ पंचवलि भुसं कुं
 भस पात्रस चतुसंस्कार ॥ स्नानयाचन ॥ भूसं कुंभस पा
 त्रस ॥ चंदनादितेयनयाय ॥ चण्डचन्दन का स्मिन् क ॥
 सूर्यदेवसंपितं ॥ सिंदूर रजतं च चंदनं ॥ हेमराख
 यो ॥ धूप वास कु फय भोसं कुंभसं ॥ भूसंक्रमचक्र
 उद्धारणाय ॥ कुंभसं कुंभने बोय ॥ कुंभसंथनेद्र

नमो ॥ वरुणो यं ह र कर कार भूमा रवि श्वं ॥ स्वान स्वान त्रि
 पुवन जनी तुम्यु र सुप्रसन्न ॥ एत न्मंत्रे क्षार यी त्वा पि वे
 द्म पतु ये अये येन मा सप्रयन्तु ॥ अरवरा ड कल शा आथः क
 रे वर सुधारिणी ॥ स्व हृदं स्युर एा त्रे यं ति दे हि कुल रु पि
 णी ॥ पात्र सयने ॥ प्रला रा उर्व ह ड संभूतं अशेष र स संभव ॥
 आपूर्तिं मह पात्रं धी पूर पर स मावह ॥ चक्र उ डार भू सन्नि
 योजि हि ॥ ३ ॥ मूल मंत्र ॥ ५ ३ २५ ॥ हे ५ ॥ हि शक्ति

ॐ नमो

चतु स्कल त्वा य मह शक्तये पाहु कां त्रि योजति ३ ॥ ततो
 पात्र पूजा ॥ हृदये न स्व विनय दर्व्यं पूर्यः ॥ कवे चेना अ
 गुरु ॥ पूजन ॥ हें ह्रीं ह्रीं ह्रीं ह्रीं ह्रीं ह्रीं ह्रीं ह्रीं ह्रीं ह्रीं
 पार मा मृत पात्राय नमः ॥ अघोर मंत्रेण ॥ त्रियोजति
 ३ ॥ मूल विद्या ॥ धेनु मुद्रा ॥ इति पात्र पूजा ॥ त्वा क महा वि
 लि ॥ धूप दीप ॥ जाप त्रि देव ॥ आदि न ॥ १० ॥ सोम ॥ श्री
 संवत् ॥ वेदे सदा ॥ उकारे ॥ प्रला रणी ॥ मध्ये तिस्था ॥ रव

कुंवा ॥ स्यामारुत ॥ प्रसन्नो यमित्यादि ॥ अत्रयन्त्यादि ॥ लोध
नमात्र ॥ एकानेक ॥ वलिवि सज्जनम् ॥ वलिविद्योय ॥
थते धुनकावमाला विसये ॥ वसये धुनकाव ॥ त्रिगुणम्
॥ सूर्यादि ॥ कुलमार्तण्डपूजा ॥ गुरुनस्कार ॥ वंति सीमास
॥ जलार्थपात्रभूतशुद्धि आत्मपूजा ॥ मात्मीनीपदपे ॥ पंच
वलिविद्य ॥ थनो साधनयाय ॥ थते धुनकाव ॥ मृत्पुंज
यकलाशपूजायाय ॥ नासादि ॥ आत्मपूजा ॥

आशन ॥ आधारराज्ञोत्पादि ॥ भ्यानं ॥ सुदृष्ट्यतिक संकासं
त्रिनेत्रं चन्द्रमौलिकं ॥ वरदाभयहस्तं च मुद्रामाला धरं हरं ॥
संबंध्यात्वा महादेवं इष्टकामार्थसिद्धये ॥ इति ध्यानपुष्पं नः
मः ॥ अघोर ॥ वज्र ॥ मूलमंत्र ३२ ॥ ॐ वृत्तरोनमः ॥ विष्णवे २ ॥
रुद्राय २ ॥ इश्वराय २ ॥ सदासिवाय २ ॥ ॐ नमः ॥ अमृतिसा
य मृत्युञ्जयाय २ ॥ पद्माय २ ॥ मार्गादि द्वादशराशिभ्यो २ ॥ ऋ
तये २ ॥ सप्तसराय २ ॥ आराधितप्रसमुद्धेभ्यो २ ॥ इडादिदश

[illegible]

उनुग्रह॥ जाप॥ हँरे सँरे स्वाहा १०॥ ध्वते कलश पूजा विधिः॥ ॥ ततो कु
म्भ पूजा॥ न्यासादि॥ त्रिदेव॥ ब्रह्मा न्यादि॥ अँ अँ ईँ ईँ १६ ध्वते नं पूजा
॥ कँ रँ मँ घँ ङँ ३२॥ ध्वते नं पूजा॥ माने काये श॥ जेनुग्रह यर॥ मूलमंत्र॥ हे मूर्ति
मानन्दसक्ति भैरवानन्दुनीराधिपतये स्तुमी श्रीकुलकुम्भभद्रारिका
यपाङ्ककां पूजयामि॥ हे स्तुमी सक्तिवतुल्य तत्वाये महाशक्तये पा०॥
पू०॥ त्रिपाञ्जलि ३॥ हे मंत्रमाकावेवा हँ नमँ दिव्यं देवी दत्वा यपा
०॥ हे अस्तौ एककला योगिनी भ्यो पा०॥ १॥ ह हा स प्रत्य धिक् पञ्चस
तसा किरि योगिनी भ्यो पा०॥ २॥ स भगवत्य धिक् च त्वा रिंशतदुता

अथ पा० ॥ ३ ॥ पृथ्वी अष्टादशोत्तमप्रसताधिक द्वात्रिं सहस्र अनेश्वरी अथ पा
 ० ॥ ४ ॥ पृथ्वी वतु चत्वारिंशधिक सतैकोपतै द्वाषष्टे सहस्रधिक द्वात्रिंश
 किंकरि अथ पा० ॥ ५ ॥ पृथ्वी पञ्चस्रधिक सतैकोपेत सप्तनवति सहस्रधिक
 कद्विकोटिका अथ पा० ॥ ६ ॥ योनिनुद्रा ॥ क्षुप दीप जाप ॥ त्रिदेव ॥ हं हूं सं
 हत्वा हा १ ॥ स्तुति ॥ रन्ध्री वधीस कलतीर्थ जलेन पूर्णा स्वच्छत्र पद्मवर्ष
 शोभित पुष्पमाला ॥ जज्ञे शुभा म्याचि खये नु निभिः पुराष्टात्तां कुम्भमु
 त्रिशिवशक्तिपुतंन मामि ॥ वरुणी लोये हर करकार भूमारयि अ
 ॥ स्वान स्वान त्रिभुवन गगन नीनु न्नु नु पुरात्र ॥ अत्र ग-धादि ॥ इति कु

ॐ पूजाविधिः ॥ ततो विश्वामित्रादि पात्रपूजा ॥ हृदयतत्त्वब्रीहिते
यपूर्य्य ॥ कवचेनावगुण्ठनं ॥ पूजा ॥ ह्रीं ह्रीं हुं ह्रीं ह्रीं हुं ह्रीं ह्रीं हुं
ह्रीं ह्रीं हुं ह्रीं परमासृजपाज्ञाय नमः ॥ अघोरमंत्र ॥ मूलविद्या ॥ धेनुमु
द्रा ॥ इति पात्रपूजा ॥ ॥ कौमारिपूजा ॥ काँ किँ कुँ फम् श्री कौमारिपा ॥
चन्दनाक्षतपुष्परं ॥ ततो धारिलपूजा ॥ लातसाकडू मार्चरायाये ॥ म
लातसामश्चिमदे गुलिवायके ॥ वलिवियखडून ॥ निर्वाराविद्या ॥
लोक्महावल्लि ॥ भावाहनादि ॥ योनिमुद्रा ॥ धूपदीप ॥ मोहनीफ
ले ॥ नाप ॥ मिदेव ॥ स्त्री स्त्री १ ॥ स्त्री स्त्री ५४ ॥ निर्भाराया ५४ ॥ स्तुतिः

॥ श्रीसम्बती ॥ वन्दे सदा ॥ सनातनभूत ॥ महाभाषा ॥ ऊकारा ॥ ब्रह्मा
राणि ॥ मध्यतिस्था ॥ खड्गन्या ॥ स्यामारक्ता ॥ मार्कण्डेयो ॥ सिद्धासं ॥ का
काश ॥ ऐन्दुस्यैव ॥ अत्रगन्धादि ॥ ॥ ध्वतेहि सयायेपरिपातिध्वं ॥
ध्वतेधुनजनव ॥ अर्द्धश्रीजागर्णवसपेमालको ॥ ध्वतेदिपवृत्ति
कादयकेविधि ॥ धारतय अर्घपात्रतय ॥ न्यासयाय ॥ काप्रिया
औरवधि ॥ हामलचुन ॥ मलच ॥ पिपुलि ॥ अंठि ॥ सेध्व ॥ ध्वतेका
लिया ॥ चरपात्रदेकोरवधरे ॥ ध्वतेल भुचर जलचर मेख
॥ सर्वचर अण्डजः अर्द्धपाक कंठ्य डव पूर वे पात्रेस ॥

तेध्वचुन ॥ सारवर औषधि रक्षाजीफोहलतवडु हरउ वेहल
अम्वर मारेव पिपित अंठि सारवल हामल सिन्धुचिधरि
उडु कसिध्वं ॥ अर्घपात्र रावडव ॥ ॥ ध्वतेतेनया वड्याये
॥ वीरडवम सर्वकाददयके त्रिकोला ॥ धिडुधवेपंचेच
र ॥ अण्डज अर्द्धपाक कंच कपूर ध्वतेगर्भयाशा ह्या
इ ॥ इताहतेन ररुदेव त्रिशिवसकेप्यडतय ॥ दधोतव
नु ॥ परिसरवचवायाडुपाय ॥ धालेसवाशावतय ॥ धि

वशक्तिदत्तिये ॥ खेवर आदिन चरुदयके ठालासत्रिकोरा ॥
 बोयावथा ५ हय खेवर ॥ भूचर ॥ जलचर ॥ अराज ॥ अ
 दुपाक ॥ कञ्च ॥ द्रव्यपूर रेपेपात्रस ॥ दिपथात आदिन ॥
 यरुदका ॥ आगमसुत ॥ धवधवथायसतये ॥ कुं भूधने
 ॥ गुरुस्यं कुं भोजनवदेव सोस्यं चोने ॥ योगिनीस्यं अलिपू
 रीया ज्ञानधने ॥ गुरुस्यं पदपे ॥ वरुण तोयं त्पादि ॥ कुं भू
 धने ॥ धवं धवथायसतये ॥ ॥ धनेवसपे पुनकाये ॥

यनाकुलपिरुपयवे विधिधे ॥ ॥ नतो कुलपिरुपयवे ॥
 श्रीश्रीगुरुनेपुष्यभाजनघातकावताथे ॥ धवअग्रसलपते दूषा
 तसकैकोतगावगुरुआवाहनयाये ॥ हस्तार्घपादार्घथे पाये
 ॥ अस्मपितरुदेरासा मन्त्रिकश्चाद्वे कुलपार्तसु भैरवाय
 इदमर्घत्वात् ॥ कलिकलुखकलान्नभ्यस्यपार्तसु भीमार
 जसकलकुलारिज्ञानसौरव्यालितार्दे ॥ त्रिदिवतलमनुती
 त्वं जनेतार्घहतां कुलुनजसफलर्घस्तो कलार्घनमाभि ॥ ॥

नमःस्थाय ॥ पिराड रोचनि वेदयेत् ॥ कुलपिराड सनस्थाय आ
या संपित् देवता ॥ ॥ लपते लाय ॥ पितर कुलपिराड सनं स्वधा
पितामह प्रपितामहादि ॥ शाश्वतिगोत्रादि स्वधा उपतिष्ठ
तां ॥ पितरं दक्षिणभागे ॥ पिराड पात्रासनं स्वधा ॥ आत्म
वाने ॥ जाधुयके ॥ ॥ प्रमातः जवोकुड ॥ कु २ प्र २ ॥ ॥
कोटोलस ॥ जाता जवकेन दक्षिणं दक्षिणं दक्षिणं ॥ धरिड
डुला ॥ धरिड कति देवता ॥ ॥ यजमानेन शपं कोटोल

जोतकाय वाक्यं याचके ॥ पितृत्वं पितामहश्चैव प्रपिता
महश्चैव च ॥ शाश्वतिगोत्राणि संधीणि ॥ आयातं इह मराड
ले ॥ अकृते आगमाभावे ये चात्ये सर्वतो कृते ॥ तेन
पिराडन्यायं अक्षीय इह मा स्थितं ॥ पितृवंस मृता
चैव मातृवंसस्तथैव च गुरुस्वसुरवंधना ये चान्ये
वाभ्यधारमृता ॥ समविषजातीनां पुत्रद्वारा विवर्जि
ता ॥ क्रिया लोपगता ये च पुत्रसंधा पुत्रवस्तथा ॥ ॥

एकाभासगर्भाश्च ज्ञाता ज्ञातकुले मम ॥ भूमे दत्ते न विरिषु ते जां द्या म
 रां गति ॥ जपरपेगा यत्रीं धार ॥ आसनतये ॥ पिराद ग्राये ॥ मालको थय
 ॥ पिराद त्रिभागथये ॥ पिराद मे हं करिष्ये ॥ ॐ कुहृषथाये ॥ भागथये ॥
 कुशान्न ॥ पिराद गोष्णव ॥ अथादि ॥ बोऽसपिरिणं सपिरिणं कररा भादे
 अमुकगोत्र अस्मत्पितुर्हृदे सपितरयथाना मे सान्व हृदिक आद्र
 कुलपिरागये एतत्ते पितर पिराद स्वधा ॥ लपते सतये ॥ वित्तमहयथा
 नमिस्वधा ॥ पुपितामहयथानामि ॥ स्वधा ॥ इति गोत्रतत्त्वसोमः

कुलपिरागये तत्ते पितृ स्वधा ॥ ॥ तिलोदकविय ॥ हामल मांस
 मय लोकक्षाडवितयाव ॥ वाकयाय ॥ पितृ तिलोदकं दास्य
 तिलोदकं द्रव्यं संयुतं ॥ तेन पिरां मया दत्तं शिव लोकं समुंजति
 ॥ अस्मत्पिता यथानामि साम्ब हृदिक आद्रि अहिवहिसहितं
 तिलोदकार्घ्यं स्वधा ॥ पितामहय एव ॥ द्रव्यसंयुतं ॥ वाक ॥
 पितामहोदकं देवं तिलोदकं द्रव्यसंयुतं ॥ तेन पिरां मया दत्तं वि
 लो लोकं समुंजति ॥ २ ॥ अस्मत्पितुर्हृदेशः पितामहय दास्य

चतित्वाष्ट्रद्वयसंयुतं । तेनपि रमयादन्ते प्रल्लोके सभुंज
ति ॥ अपि तामहाय एवं ॥ द्वय संयुतं ॥ वाक्यं ॥ पूर्व ॥ ३ ॥ ज्ञा
ति गोत्रस्य ॥ ज्ञातिगोत्रिषु सर्वेषु तित्वाष्ट्रद्वयसंयुतं । तेनपि
रां मया दत्तं स्वर्गगच्छति गोत्रकं ॥ सद्यः ज्ञातिगोत्रेभ्यः
अतिवहति तित्वाष्ट्रद्वयसंयुतं ॥ ४ ॥ चन्दन ॥ सुगन्धचन्द
नैवैव चन्दनं तिलकं शुभं । सर्वपापविनिमुक्तं विष्णुलोके
महीयते ॥ आच्छाद्य ॥ जजमका ॥ पत्रा ॥ आच्छाद्य सर्ववर्णा

नां पितरोत्रयदेवता ॥ गृह २५ होत्साह प्रल्लोके महीयते ॥
नाना पुष्प ॥ चम्पकं भृंगराजानां नाना पुष्पसमाहृतिका ॥ गृ
हं नृपितरसर्वे शिवलोके महीयते ॥ फल्गादि ॥ यथाज्ञं च
विधे नैव नाना फलसमायुतं । इक्षुताम्बुतकं चैव गृह्णा
पितृदेवता ॥ दुडुपात्रतित्वाष्ट्रद्वय विधाय ॥ पयं चैव तुषात्रा
रि ॥ दुग्धं यममृतं यथा ॥ पितृपाहा रसं तुष्टं गृह्णां पितृ

प्रियुषा ॥ ॥ जलपात्रतिलोदकविय ॥ निर्मलं जलपावनं
 पूर्णपात्रप्रदानिच । तृणानिवारयित्वा प्रगृह्णतां पितृभिस्व
 धो ॥ ॥ हृदुवामधिष्ठाय ॥ मोदकाद्यानि सैर्घाति सक्ती
 नंच तथैवच । गृह्णन्ते मे पृष्ठ पितृभिर्गृह्णन्ते स्वधा ॥ ॥
 मद्यपात्रतिलोदकविय ॥ आनन्दमुदितो हृद् वासु रि
 पात्रप्रदानिच । सुसंस्तुष्टानि भद्राणि गृह्णतां पितृभिस्वधा ॥
 धूपयाय ॥ आहो रंसे देवानां धूपे आशिदका हरां । गृह्

तपितृभिश्चैव धूपत्रै लोकावासिनं ॥ ॥ दीपयाय ॥ उपा
 तिरुपंतमो हन्ति जलनपाको निच । सर्वशालिकरं चैव पितृभि
 दीपगृह्णन्ते ॥ ॥ कलपुष्पताम्रलापूगी कलमिष्टाश्वादि
 छाप ॥ दक्षिणाद्याय पिराडस्य ॥ मराडलयाडयस्वानडा
 वेवाय ॥ कुशमस्तुल्यज्यङ्गम मराडलसंस्तुतस्वहा
 यकंतय ॥ अद्यादि ॥ कलपिराडदीयते पुराण्डकुरे सपुव
 सकं । तस्य पुराणस्य भावेन शिवलोके महीयते ॥ इत्येवमुक्ति

लामुक्तपितृभिश्चतिलोदकं । साष्टाङ्गं प्रनिपातेन पितरौ शि
 वलीयते ॥ हं रवजो वावतो डते ॥ ॥ तौत्र ॥ नमस्तु तस्मै पित
 रोगराय संपूर्णतुष्टं संमस्तभाव । इव्यानि छिद्रकश्चक्षम
 स्वमेधपितरोऽनस्य ॥ अत्रगन्धपुष्पधूपदीप अर्घ्यनिधि
 धौ तत्सर्वं विधिपरिपूर्वमस्तु ॥ ॥ रत्नाकुङ्कुमग्रीसकु
 लपिण्डपय परिपातिथये ॥ ॥ ॥ कुलापिराडय
 धुनडावप्यनासवेयाय ॥ शो गिनी आदिनगरा पुंतावि

रोहय ॥ ॥ ॥ पडये ॥ क्षिराणीव सर्वभूतं कोंकनेन प्रका
 शितं । सहजानन्दसत्तोहं निर्मितं परमृतं ॥ वरुणां च सर्व
 षामेविवर्णमृतमं । कुलसासनोपि सिद्धार्थं अत्र पात्रं
 प्रगृह्यतां ॥ सेवे च परमाविद्या सेवे च परमाकला । से
 वे च परमाशक्ति गृहीतकोलाकेश्वर ॥ चरुसकल उनापा
 ष्याज्यगुरुसंयोगे गिनी आदिन सकलस्तौ विसहय
 जुहो ॥ ॥ पुष्पभाजनयाय ॥ अर्घ्यं ॥ अथादिमासन

क्षत्र ॥ गुरुनमस्कार ॥ वतीशील्यास ॥ जलार्घ्यात्र भूतशुद्धात्म
पूजा ॥ यनायोगिनीपूजा ॥ आधारशक्ति इत्यादि ॥ ८ ॥ स्निहा
सनायनमः ॥ यवप्रेतासनायनमः ॥ ह्योस्नाहाव ह्युप्रेतास
नायनमः ॥ सवासनायनमः ॥ ध्यान ॥ ॥ चेतन ॥ ऐं विलेपनं
पादुकां ॥ श्रीखण्डचन्द्रनन्दनमिति ॥ सिद्धुर ॥ श्रीवीरभस्म
पादुकां ॥ विरेज्यसहावीरेति ॥ मोहनी ॥ श्रीसर्वजनमोह
नीपादुकां ॥ मोहनकामसंसिद्धस्तंभायाकजरतिथा ।

अभ्रातंचक्षुसौभाग्यं मोहनं दृष्टिदायकं ॥ जजमका ॥ ह्योरीज
सोपवीतकपादुकां ॥ यज्ञोपवीतमीति ॥ वस्त्रा ॥ स्नान ॥
ह्योनानाह्वयजका पुष्पापादुकां ॥ नानापुष्पसुगन्धानि इति
वस्तु ॥ नानावस्तुविचित्राङ्गीसिद्धुरहरासोभितं । देवाङ्गु
ष्ठितं श्रीष्टं संक्षिप्तं कारसोभितं ॥ पूजन ॥ ऐं वज्रकुक्षिनिहृ
त्रैलोक्याकर्षिणी ह्रीं कामाङ्गुद्रावनि क्रीं श्रीं महाशोभका
रिणि ऐं सौं स श्रीपादुकां ॥ ऐं पुनमोभगवति ह्योरीकुक्षिका

पेशदेवदेवं चतुर्भुजं निष्कलं सकलोत्पन्नं कमलपत्रं नमः
 ॥ विजुहाय ॥ मुद्राय ॥ ऐं ॥ गुरु वीर इमं धर्मं सि
 क्षाणां मणिमोदिता ॥ ब्रह्मक्षत्रीयचाराणाल्ले एकाकारन
 मा म्पहं ॥ सागतं धर्मं राजानां मदरागविवर्जितं । देवादे
 य विनिर्मुक्तं तत्त्वेकं नमिष्ये त्वया ॥ समस्तमंत्रोत्पादिपदप
 ॥ गुरुस्य पात्रतव हारय ॥ यत्तिथिय ॥ यत्तिगुरुं महाभरच
 रुतं वेद्यसाधनं । मोक्षं भवतु सत्प्राप्तं निष्कलं स्फुटं

कोपमं ॥ अन्नं महारसं दिव्यं सर्वभूतसदोदितं । सकलं नि
 स्कृतं । दूर्तं मज्ज पत्रनमाम्यहं ॥ आवाहनादि ॥ मुद्रादर्शनं
 ॥ च पदीय नैवेद्य ॥ अन्नं महारसं दिव्यं रसेष्वपि समं
 ज्यतं । मयानैवेद्यतनुभ्यं गृहाराण्यरमेश्वरि ॥ नैवेद्य
 गृह्यतां देवि भक्तिर्मेऽवलोकुरु । अपस्यति हरं देवि प
 रत्रस्यापरांगति ॥ आपसोऽत्र ॥ शततिन्युरदक्षिरांगतुभ्य
 महंसंप्रदत्ते ॥ हं पसिन्धूरचन्दनविलेपितपुष्पमाला ॥

यत्नोपवीतवसुराडाश्रुनधूपदीप। तामूलमोदकफलानि
स्निग्धार्चनेण संपूर्णपात्रमस्तिनीमिहमीतयुक्तं ॥ एतानि स
र्वरविताप्रतिपूजितानि देवीकजाप्रभृतिदेवगणासं स
र्वी। संपूजिता फलमिदं श्रियसंप्रदामि शान्तिं सदा भवतु
मङ्गलदेहतादिना ॥ निर्विघ्नं विलजा गन्तु आदि मुख्याय
सातके। अस्मत्पुण्यालोका नां शिवं भवतु सर्वदा ॥ या
साभेदाभिजेदं परमपरकथा चतुसिता समस्था प्रसा

विष्णुश्चरुदसकलपरिनगोभूतनित्यसरने। सत्मासादु
सोसंभुवनमृगहरेण वायहस्तेषुकारं ॥ स्थामारत्नाहरण
द्राप्रणमतिशायरीसिद्धिगौरीशनाथं ॥ यादेवीकुत्रिका
ख्याक्रमकलसकलं मण्डिते स्थण्डिते वा ॥ द्वात्रिंशोपा
पीठशतनगुणावृत्ते योगिनीवीरवन्द्यं ॥ देवोयं श्रीकरुण
नाथयतीनपरिवृतादीपयागाविपुण्या। विष्णोर्नामं श्राप
मुक्तं मभिमतफलदा राजातद्दम्प्रीप्रदाता ॥ सिकूरपुंडश

६ साराण चारुनेत्रा । रक्ता मयं मुतमुभा मरुतु माता ॥ का
शाधुता सवयुता मयविहृ हस्ता ॥ तस्मै नमः सुसततं कुल
योगमात्रा ॥ योगिनी का प्ररुपा सुरगणा भूततपका नृश
रीभा ॥ मन्त्रा कंकाल माता गङ्गा गता ततिरक्तवस्त्रोत्तरीयां
॥ तिङ्गं धारं कपातं मृतिमपि विधति स्मृता भुपसंनता ॥
सत्ताराणां साधकानां मभिरित्यतवरं श्रेयं मानो प्रसंनता ॥
इच्छा शक्ती क्रिया सेत्यादि ॥ स्था मारुतीयादि ॥ यथा वा होत्या

दि ॥ अस्मत्पश्चि मजेष्टं जेष्ट महा माया श्री कुटुम्बिका देव्याये
अमुक निबन्धित्यर्थे अर्द्ध रात्रि निशा र्द्धनदीप या गा र्द्धनति
मित्यर्थं श्री श्री श्री कुटुम्बिका देव्याये यथा श्चा स्त्रोक्त फल प्र
दायको भवतु ॥ दक्षिणा ॥ अत्र गंधादि ॥ त्रिविधं प्रया
तु ॥ १०७ ते योगिनी पूजा ॥ ॥ त्रिदेव ॥ कर्म यो मूलं नया
य ॥ योगिनी सया को याय ॥ मंत्र यव यव स ॥ जापे स्तोत्र
यव यव ॥ देव स के योगिनी सया को विधिन मात ॥ आ

सन पूजनजास्तोत्रधवश्चरुहो ॥ अपशिखानाचपूजायाय ॥ आ
 धारशोकेत्यादि ॥ चूंषासेनायनमः ॥ पंचप्रेतासेनायनमः ॥
 अलंकारहृपुयाविधिष्यं ॥ कुं अघोरे कुं पघोरे कुं चार चारत
 रे कुं संचेतः सर्वसर्व कुं तुं तः कुं रुद्ररूपे कुं पाहुका ॥ ऐं प
 कुं आनन्दशक्तिभैरवानन्दवीराधिपतये स्तुति ॥ पाहुका ॥
 ऐं प स्तुति ॥ ऐं प स्तुति ॥ ऐं प स्तुति ॥ ऐं प स्तुति ॥
 पाहुका ॥ त्रियाजलि ॥ छंड कुं ॥ वलि ॥ पूर्वपात्रादि

दक्षिणा ॥ सर्वविधिवत्संपूजा ॥ सिन्दूरचन्दनविरेत्यादि
 ॥ मुद्रसात्रशसुत्रं फटिकमणिमयं भूतकर्षणकारि ॥ पंचा
 त्यं पंचवर्णी चरति दशभुजं प्रलसस्तास्तकंच ॥ हंडुदि
 व्याकुं भूषं त्रिमणिनयनं सर्वयज्ञोपवीतं ॥ देवं च्छन्दमभि
 सकलभयहरनौमिनाथानि रविश ॥ ॥ इति गणपूजावि
 धि ॥ ॥ वीरजगज्जुकोत्पदे वार्धनं ॥ स्तुति ॥ गुरुन
 मस्कारं कृत्वा पछि मरेरु रिखा ५ नयाय धूप दीप जप

श्रीगुरु ॥ सगणसकेशो गिनीसके आज्ञा काय ॥ आज्ञा प्रसाद गुरु
रुनामगां योहीचक्रे आज्ञा प्रसाद गुरु सागरासिद्धि लक्ष्मी ॥ आज्ञा
प्रसाद पर्योगिनी योकापात आज्ञा प्रसाद प्रमदेहि च स सर्वसिद्धि ॥
आज्ञा प्रसाद विमल स्वतु शक्ति दीप ॥ प्रबोध स साभय भावने
॥ आराधितं श्रीवर जागृनिज करे तिनाति भगवान् कुजेरा ॥
आज्ञा २ भाग ॥ सब स्ये ज्ञान तो चरु जायात वने ॥ ॥
हउ आभरण नति ये अडु बाल आभरण को रवाय ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय जलार्च पात्र भूत हव्यात् पूजा
॥ ॥ ततो पंचवाहिनं दद्यात् ॥ आवाहनं ॥ दिमुद्रा जाप रत्नात्र
॥ अर्घपात्रोदके तत्रोक्षरां ॥ सकलगुस्तं हय ॥ ऐं कु प्रिका
ये विप्रहे कुलदीपाये विमले तत्रो कु प्रिप्रचोदयत् ३
॥ अथ महापात्र पूजनं ॥ आभार शक्तादि ॥ ध्यानं ॥ ह्यक्षा
रसतिमा देवी जगदीश्वरी मरु गिरिणी ॥ यो वनो न नुरु पांगी
त्रिजादिवरु पिणी ॥ मदि रा मरु ये तत्पुजा द्याद शेषा

रिणी ॥ इव कुत्रिभूलवज्र आदि लिङ्गं मुकुटं तथा ॥ गदा पद्मव
रं पात्रं सव्यं हस्तं विराजितं ॥ फेदका कुशोद्योतका चरयन्त्या कुं व
धकं वृजं ॥ नीलोत्पला भवे विदु वामं हस्तो पुष्पा रिणी ॥ दिव्य
रत्न कृता तोषहे माभरणाभूषिता ॥ स्वेतपद्मा सती देवी वक्ष्य
मासनी स्थिता ॥ एवं रूपं महादेवी वासुणी विश्वरूपिणी ॥ क्रि
मेन सिद्धिदं चैव क्रिया सिद्धि सन्निभित्वं ॥ संसेव्यते महा वि
द्या प्रायश्चित्तादि सोधने ॥ महा सिद्धि करं चैव महासायप

मेचनी ॥ महाशक्तिकरं नित्यं महा व्याधिरुजापहं ॥ एवं सिद्धि क
री देवी पानपूजा महाफलं ॥ इति ध्यान पुष्पं नमः ॥ अथो रव
जुवतिसि ॥ द्वादशाक्षं ॥ स्तुतिं सिद्धाये पादद्वयो पादुकां ॥ स्तु
तिं भाये गानुद्वयो पादुकां ॥ स्तुतिं विदु नारयि उरुद्वयो पादुकां ॥ स्तु
तिं लक्ष्मी गुप्ते पादुकां ॥ स्तुतिं ज्ञानेना भो पादुकां ॥ स्तुतिं माहि न्यै हृदये
पादुकां ॥ स्तुतिं शिवाये कले पादुकां ॥ स्तुतिं वज्रमुखाये मुखे पा
दुकां ॥ स्तुतिं नासाय नासिकाय पादुकां ॥ स्तुतिं कटका

येकहुं हयो पाडुकां ॥ सह हरिके सिन्धु क्षरे पाडुकां ॥ सह मुक्ति सि
र सि पाडुकां ॥ ॥ इति द्वादशोऽङ्कः ॥ ॥ सह सर्वज्ञाताय ह
दयाय पाडुकां ॥ सह अमृतनेत्रे जो माहि नीत पिशिरा स्वाहा
॥ सह अच वेदनी भूति दिवो वशिखा ये वोषट् ॥ सह वज्रिनि
वज्रधरा ये सुमंत्रक वचाय हं ॥ सह तां वीरिनि अलुप्त शक्तेः
सहस्रतेजो विनेनेत्र त्रयाय वषट् ॥ सह नमस्तुभ्यं अनन्य
लिप्ती हं वट् महापात्र पता स्त्राय सह स्वाहाय हं वट् ॥ ॥

इति षडङ्कः ॥ ॥ सह सह सह महापात्र भट्टारकाय
पाडुकां ॥ आवाहनादि ॥ गोत्रिमुद्रा ॥ स्तोत्र ॥ काय विष्णु
ति पूर्ण परममृत भयं रक्त सिंदूर वरा प्रसादं एव एतं
भूतावेहति अहिनिशं शुक्लनां वा यदवा ॥ सा सृष्टि श्रुति
रूपा सकल सुरगणा स्तोत्रेय नि सदेवी. स्तोत्रा गीतं दिव्य
नेत्रे जो अभिमत फलदा मोक्षदाक्षी सदाता ॥ महापात्र पूजा
यते ॥ ॥ स्वस्वर पूजा ॥ विष्णु चक्रा सताय पाडुकां ॥

ध्यानं ॥ नीलं सुगानने देवं चतुर्बाहु त्रिलोचनं । विशूलं जाप्यमा
 लाभ्य विश्वामित्र पुरातनं ॥ रवंगेश्वरं कामातुलं विशुद्धिचक्र
 संस्थितं । ध्यात्वा च रेवचरं देवं लक्ष्मी सोभाग्यदायकं ॥ इति
 ध्यानपुष्पं नमः ॥ ऐं ह्रीं क्लीं महसिद्धि रेवचराये पादुकां ॥ ऐं ह्रीं
 क्लीं महेतारिकाये ॥ श्रीं क्लीं क्लीं क्लीं क्लीं क्लीं क्लीं क्लीं क्लीं क्लीं
 साकिनी प्रहृतिपुरीषकी सानन्द देव पादुकां ॥ वसि ॥ वागी
 श्रीं श्रीं रत्नगगण लोक भोगगर्भ गामिनी गगण लोक

अमृतसंचारिणी गगणानन्द देव गगणाम्बा चतुःषष्टीलक्ष
 कोटियोगिनी सिद्धिचतुःषष्टीलक्ष कोटियोगिनी पादुकां ॥
 वसिं गृहं स्वाहा ॥ आवाहनादिस्वोभनी मुद्रां दर्शयेत् ॥ ॥
 सोमं ॥ रेवचरसिद्धिदं भद्रं सर्वसंघतिदायकं । मोक्षलक्ष्मी
 सदा तस्य ईश्वरं नमोस्तुते ॥ अत्र गन्धादि ॥ इति रेवचरपूजा
 ॥ ॥ भूचरपूजनं ॥ अनाहृतचक्रा सनाय पादुकां ॥ ध्यान
 ॥ पीतवस्त्राभिभूतं चतुर्बाहुकरं मुनिं ॥ चतुर्भुजं पुस्त

काक्षं पात्रैकपद्मनामृतं ॥ अरुणाय नमः ॥ अथ चतुर्दशपुराणं
। पञ्चरत्नस्थिता नित्यं ब्रह्मरूपं च ध्यायेत् ॥ ॥ ५ ॥ मूल
भूवराय पादुकां ॥ धारे अघारे अघार मूर्त्तौ वरुणा ॥ ॥ ६ ॥
मूमलायिकां कीर्त्तयन् अनारुतकाकिनीये गुरापुरी विश्वा
नन्ददेवपादुकां ॥ ॥ ७ ॥ मायाये ह्यरुणाय गौरीयकभोगगम्भ
र्भगामीनी स्वर्गलोक अमृतसंचारिणी स्वर्गानन्ददेव
स्वर्गायवाती सलक्षकोटियोगिनी सिद्धिदात्री सलक्ष

कोटियोगिनी पादुकां ॥ वसिं गृह्णन् स्वाहा ॥ आवाहना
दिद्रावती मुद्रां पश्य ॥ ॥ स्तोत्र ॥ भूवर भुवनं सर्वं प
वित्रं देहसाधनं । सृष्टिस्थये ददौ लक्ष्मीं ब्रह्मरूपं नमोस्तु
ते ॥ इति भूवरपूजा ॥ ॥ अथ चरपूजनं ॥ ॥ ५ ॥ नमिष्वकव
कासमायपादुकां ॥ ध्यायेत् ॥ कुण्डलुहिमसंकासं मीनवक्त्रं
अयम्यकं । वृत्तिहस्तो मनीचक्रं मकरासनं स्थितं ध्यात्वा
अहवरोदयं वृद्धिं योगे मुखश्रियं ॥ ॥ ५ ॥ मूलजल

चरणपादुका ॥ हों हीं हें वर शिखे हें हें वर लीं वी लो लीं लूं
 लूं मनी पूरक लो कि लीं ये मह पूरी जी राठी जाने देव
 श्री पादुका ॥ जानाय स रत्न मत्स लोक जोग मन्त्र गा
 मिनी मत्स लोक अनन्त संचारिणी मत्स निन्द देव मत्स
 म्वा अष्टलक्ष कोटि सिद्धि अष्टलक्ष कोटि यो गिनी पा
 दुका ॥ बलिं गृह्ण स्वाहा ॥ आवाहनादि आकर्षणी सु
 द्वांदर्शयेत् ॥ ॥ स्तोत्र ॥ समुद्रो भव संजाला पवित्रं यो

पनाशनं । सिद्धि सौभाग्यदं भडे विष्णु रूपं न मे सुते ॥ ॥
 इति उत्तर पञ्चा ॥ ॥ सेतु पञ्चा ॥ स्वाधि स्थान चक्रा सता
 य पादुका ॥ ध्यानं ॥ रत्न वरणी महोत्तेजं सा लित वक्त्रं त्रिलोचनं
 हं त्यक्त्वा हं हं च मुक्ता पात्र मृतालयं ॥ प्रति पूरक चक्रं स्थं क
 ल्प दृष्टो स्थितासनं हं वं सेखर रूपं च धन धान्यं च भोग्यदं ॥
 श्री महा सेखराय पादुका ॥ हं ५ हं कुटुम्बिका ये कुल दीपाय हं
 श्री महा भो री हं ॥ ॥ स्वाधि स्थान रा किराये धीपु

चारिणी अनननन्द देव अनननाम्ब अनननलक्ष्मीकोटि
मिमीम्बः पादुकां ॥ वलि ॥ आवाहनादि ॥ उवादिनी मूढं
प्रदर्शय ॥ लोत्र ॥ सर्वचरुपासनं पुन्यविभ्रंदेहसेवि
नं ॥ इच्छासिद्धिक्रियासर्वविघ्नपन्नमस्तुते ॥ ॥
इति सर्वचरु पूजा ॥ ॥ कालिपूजा ॥ आज्ञाचक्रासनाय
पादुकां ॥ ध्यान ॥ नीलाश्विननिभं देहं चतुर्बाहुविला
चनं ॥ रघुप्रेतधरं देवं पूर्णपात्रकं हयं कालिमां

सारतो नित्यं विश्वसंसारतारकं ॥ आज्ञाचक्रस्थितां देवी
कालिकां विनासनी ॥ ॥ ५ ॥ कालिकादेवी पा
दुकां ॥ ॥ ५ ॥ किं ॥ शिवो को हुनाये ॥ ५ ॥ नत्वाधिप
तयहो हीं हं हं अज्ञाह कि नित्ये पु ॥ ५ ॥ श्री अस्वरी
स्वानन्द देव पादुकां ॥ मोहनी शूरता पवनलोक
जोगनभोगा मिमी पवनलोक अमृतसंचारिणी
पवनानन्द देव पवनाम्बा को उरालक्ष्मीकोटि सिद्धि

उशलसकोटि योगिनीभ्यः पादुकां ॥ वहि ॥ अवाहनादि
॥ महोक्तशुभं प्रदर्शय ॥ ॥ स्तोत्र ॥ नमस्तस्मात्तिका
देवीसंज्ञानिर्वाणादायिनी । व्याधि शोक भयं हारं का
लमनुभयापहं आपुपुत्रं जसो भाग्यं लक्ष्मी संपद
दायकं ॥ काति मंत्र तनालीनं आनन्दं वरुमाश्रितं
॥ इति काति पूजा ॥ ॥ महाप्रपूजा ॥ यो यो यो यो
ललाटे देव उक्षणी पुरी को ह्ये सानि दे देव पादुके ॥

ये पहां आनन्दशक्तिभैरवानन्दपीरविपत्तये स्तुतं श्रीमहा
त्रयं नमस्तस्मात्पादुकां ॥ ॥ स्तोत्र ॥ ॥ कायं वि
द्या रिपुणा परमभुक्तमयं रक्तसिन्दूर वरुणात्मा
देवी दिव्यरयालुरवसगगाव दिता लोकपाला ।
सोमृष्टिष्टुष्टिरुपासकलसुरगणास्तारवयनी सदेवी
सोभाग्यदिव्यतायं मभिमानकला मोक्षलक्ष्मी सुदाना
॥ ॥ इति महाप्रपूजा ॥ ॥ असृजपूजा ॥ ॥

श्री कामसा ॥ श्री देवी पादुकां ॥ ध्यानं ॥ चंद्रकोटि म
 ल ॥ हतैजं त्रिनेत्राच वलुभ ॥ पूर्णपात्र स्थिता देवी वर
 दा क मलाभयो ॥ वस्त्रा लंकार देवांग सोभा ग्पं सिद्धि
 का मका ॥ भा कामसा त की देवी प्रमेश शक्ति नमस्तुते ॥ हं प
 श्री लो ली लूं लूं लूं ॥ श्रिया शक्ति ये पादुकां ॥ वल्लि गृह २ स्वा
 हा ॥ अमवा ॥ हनादि ॥ खचरि मुद्रां प्रदर्शय ॥ ॥ स्तोत्र ॥
 अराज काम श्री देवी सर्व भद्र नकारणी ॥ हो ग शंका

नितापानिसर्वपायप्रणासनं ॥ इति अराजपूजा ॥ ॥
 अथ पाकपूजा ॥ ऐं ॥ श्रीराजसात्यकीदेवीपांडुकी ॥ अं
 नं ॥ सर्वकोटिप्रति श्रीकभ्यं युगहस्तं त्रिलोचनं । वि
 नूपात्रमुक्तापूर्णं उत्पलं वरदाभयां ॥ नानालंकार
 भूषाङ्गैश्च काममुखसिद्धिदा । त्वं राजसात्यकीदेवी वि
 श्वशक्तिर्नमोस्तुते ॥ ऐं ॥ ऐं ॥ श्रीमानशक्तिं ये पा
 न्दुकां ॥ वसिष्ठं गुरुं दत्तात्रेयं ॥ आ श्रीं वाहनं दि ॥ वी

जमुद्रां प्रदर्श ॥ सोम ॥ स्वतनो राजश्रीदेवी इच्छा काम सु
 सिद्धिदा ॥ सर्वशान्तिकरं नित्यं सर्वसौभाग्यदायनी ॥ ॥
 इति उक्तं पापपूजा ॥ ॥ कंच पूजा ॥ ऐं पत्नीं तामसी
 स्वात्मकी देवी पादुकां ॥ ध्यानं ॥ कान्ता गिनेच ॥ तमवसा
 अयत्तं मुजवेदशां ॥ काद्यविद्या ॥ पूरुगिनि पारि ॥ जा ताव
 राभया ॥ सर्वशृङ्गार वसाया सर्वसंपत्तिदायका ॥ त्वया सा ता
 मसीदेवी रुद्रशक्तिममस्तुते ॥ यों यों रं ॥ इच्छा शक्ति

ये पादुकी ॥ वलिंग ॥ २ त्वाह ॥ आवाहमादि ॥ सहयोगि मुद्रां दर्श
 ॥ सोम ॥ पावजं तामसी देवी सर्वसंपदं दायकं ॥ सर्वशान्ति
 रं नित्यं लक्ष्मी संपत्तिदायकं ॥ इति कंच पूजा ॥ ॥
 वारुणी घट पूजा ॥ ऐं पत्नीं देवीं ॥ श्री वरुणी कुत्रिका
 ये पादुकां ॥ ऐं पत्नीं नन्दशक्ति ॥ श्री वरुणी पतये सु
 श्री कुलकुंभ महारिकाय अतिम ॥ ये पादुकां ॥ गायत्री
 ॥ ॥ सम्पन्नक पूजा ॥ सर्ववर्त्त ॥ देवी वरदा भय

हस्तकं। त्रिनेत्रं च महासौम्यरिद्वि सिद्धिदो शुभं॥ ॥ ॥ ॥
 महासर्वसिद्धिजनैः पादुकां॥ वलि॥ आवाहनादि॥
 योनिमुद्रां॥ शोचं॥ सप्रयातक महादेवीरिद्वि सिद्धिप्रदा
 यकं सायमुत्तमसर्वसुखसायप्रमोचनी॥ ॥ कुंभ॥ वि
 कसितकरं पद्मे संस्थिता वभुपात्रे अरुणा रश्मिं तं गी
 काद्यविहारि पूर्णा॥ परममन्त्रसंघं दिव्यमानन्दरूपी स
 रनरुचिरचन्द्रे तोषिता देवदेवी॥ मूर्त्यो कोटिप्रतीका

शं इषमहसितानना॥ चित्तामनिरुसा श्रीमान्ददो माता कुजे
 श्वरी॥ ॥ ॥ ॥ पादुकां॥ अचोरास्त्रसावलि॥ आवाहनादि
 योनि ॥ ॥ ॥ मुद्राप्रदर्शप॥ शोचं॥ यासां कामाङ्गु धेनुश्र
 वतिप ॥ ॥ ॥ रिकलायननिर्वाणारम्भे चन्द्रादित्याग्नि
 मध्ये प्रवृत्तिगुराग्निभीषश्रुद्रव्योधिकारि। रत्नाक्षीपंच
 भूतो वसतिगुरागृहे नादगंभीरलोका॥ सा देवी दिव्यरूपा
 ददतु मम सदा षष्ठरिद्विप्रदाता॥ ॥ यतिरियोभिनीव

लि॥ॐ वरायवलिं गृह्णस्वहा॥ घोष पंठाय ॥ रं महा
 नासाय ॥ ह्रीं सुमुखाय ॥ थेंदुखाय ॥ घोषलाय ॥ रं रे
 वत्यै ॥ ह्रीं प्रथमायै ॥ घोषाय ॥ रं सोमाय ॥ घोषीमाय ॥
 रं महापलाय ॥ नं जयायै ॥ रं विजयायै ॥ हूं अजितायै ॥
 सं अपराजितायै ॥ वं महाकृत्यै ॥ स्वं संहारिणे ॥ वं विक
 लाय ॥ स्वं जानुहिरणे ॥ वं दक्षिणायै ॥ सुं सुस्करवत्यै ॥
 नं पुष्पाहारिणे ॥ मं अगम्याय ॥ सै संहारिणे ॥ रु मं द

कल्पये ॥ सं ह्राय ॥ ये भीमाय ॥ हुः उभकाय ॥ मे भद्रभी
माय ॥ अँ अघोराय ॥ त्वं सिद्धिदायै ॥ ३२ ॥ ॥ तौलीं लूं लूं
तूं ह्राय वज्रहस्ताय सुराधिपतये वलिंगु ह्रस्वाहा ॥ रौं
रीं रूं रूं अग्नये शक्तिहस्ताय तेजाधिपतये वलिंगु ह्रस्वा
हा ॥ त्रूं आग्नेये ॥ मों मीं मूं मूं मूं मयमाय ह्राय हस्ताय तेजा
धिपतये वलिंगु ह्रस्वाहा ॥ त्रूं दक्षिणे ॥ क्षों क्षीं क्षूं क्षूं
क्षूं नैऋत्याय रविक हस्ताय राक्षसाधिपतये वलिंगु ह्रस्वा

य कोमारीशक्तिसहिताय वलिंगुद्वयस्वाहा ॥ दक्षिणे ॥ ऐं ५
मं मं श्री क्रोमैर वायव्ये सवीशक्तिसहिताय वलिंगुद्वय
स्वाहा ॥ नैऋत्ये ॥ ऐं ५ मं मं श्री उन्नतभैरवाय वायव्ये
शक्तिसहिताय वलिंगुद्वयस्वाहा ॥ पश्चिमे ॥ ऐं ५ मं मं
श्री कं पातेशभैरवाय ऐं प्रायनीशक्तिसहिताय वलिंगुद्वय
स्वाहा ॥ वायव्ये ॥ ऐं ५ ओं श्री भीमेशभैरवाय
यामुण्डाशक्तिसहिताय वलिंगुद्वयस्वाहा ॥ उत्तरे ॥

ऐं ५ ओं अश्रीं संहारभैरवाय महालक्ष्मीशक्तिसहिताय
वलिंगुद्वयस्वाहा ॥ इत्यनेन ॥ ॥ पूर्वादिदिशां तं अथ उ
च्चैर्लोकानि भैरवविधिदशवलि विधय मंत्र ॥ १० ॥ ऐं ५ कं
त्यं गं चं डं पूर्वपीठाधिकारे हेतुकभैरवाय वलिंगुद्वयस्वा
हा ॥ पूर्व ॥ ऐं ५ चं छं जं मं श्री आग्नेयपीठाधिकारे त्रिपुरा
संकभैरवाय वलिंगुद्वयस्वाहा ॥ आग्नेय ॥ ऐं ५ टं ठं डं
तं दक्षिणपीठाधिकारे अग्निवैतालभैरवाय वलिंगुद्वय

स्वाहा॥दक्षिणे॥ॐ धर्मेयं दधनं नेत्रमेपीठाधिकारे अग्नि
 त्रिहू भैरवाय वलिंगुह २ स्वाहा॥नेत्रमे॥ॐ पपैकैयं भै
 मं वासुदेवा पीठाधिकारे कल्लाक्ष भैरवाय वलिंगुह २ स्वाहा
 ॥पश्चिमे॥ॐ रं तं यं वायुपपीठाधिकारे कपा हिस भैरवाय
 वलिंगुह २ स्वाहा॥ॐ धं शं वं संहं डं गर पीठाधिकारे रुद्र पा
 द भैरवाय वलिंगुह २ स्वाहा॥उत्तरे॥ॐ पक्षे ईशान पीठा
 धिकारे भीम रूप भैरवाय वलिंगुह २ स्वाहा॥इशाने॥ॐ प

अं अध पीठाधिकारे हाटक भैरवाय वलिंगुह २ स्वाहा॥अध
 नेत्रमे॥ॐ पंडु पीठाधिकारे ह्वांगगरा भैरवाय वलिंगु
 ह २ स्वाहा॥उड्ड ईशानि॥पूर्वा दि इशानां अध उड्ड
 ह ॥कादि वलिपथ॥पश्चिमे धुनः न दे॥दीप प्रज्वालने॥
 वायं मंत्रा॥ॐ अ न न मंत्रेण दीप प्रज्वालयेत् स्वाहा
 ॥३॥हादयं ॥ॐ षडङ्ग ॥स्वस्ति वाक्य॥ॐ पस्वस्ति
 कृष्ण सदा विधि स्वस्ति मार्तण्ड मेव च योगिनी

स्वस्ति सर्वस्व स्वस्ति दयाप्रदेवता ॥ नाभि कुरु ललितं भूतं श
क्ति दीपमोहरं । प्रकाशपरमं तेजं मानविमानदायकं ॥ ह
व्यपराधिपतिः स्वस्ति कृतांगिदेवता । वन्दीनां देवता
सर्वं ज्योत्स्वं नमोस्तुते ॥ आनन्दोत्तमं त्रिमासं दीपं ज्वलंतं वा
पनाशनं ॥ दहति सर्वपापानि सपुण्यमस्तुतपिह ॥ आरात्रि
कस्तुतं सर्वं सर्वत्र तिमिरावहं सर्वद्विपावलोकं तु नामुप
लब्धदेहसो धनं ॥ चन्ददीपविनिर्गतं सत् सर्वसाधरि पूरितं ॥
स्वस्ति शान्ति सदा लक्ष्मी स्वस्ति कुरुते मङ्गलं ॥ दीपदर्श

नमात्रेण सत्त्वितानन्दकारयेत् ॥ दहति सर्वपापानि अ
लक्ष्मीमलनासनि ॥ सर्वशान्तिकरो देवी विद्यातं आप
मोचनी ॥ भुक्तिमुक्तिप्रदं दीपं वरिष्ठतागराशिजिनी ॥
॥ अथ दीपपूजनं ॥ ऐं ५ आज्ञास्वका समायनमः ॥
ऐं ५ ह्रीं कुरुते श्रीपादुको ॥ ध्यानं ॥ कनकारताश्र
मुक्ता त्रिपठगतियुता त्रिगोदेवी त्रिमात्रा ॥ व्याख्या
त्वारिहस्तामभिमतवरदा शक्तिशुभं शुचायो ॥ जिह्वस

साजालिलं जति पिलितरवा ह व्यपूरा घृतेन ॥ विस्वसं
 सारव्यापि जयतु परमदा मेघमाह रुदेवी ॥ त्रिंशजति
 ॥ अघोर वज्रवति सत्रय ॥ २५ चतुर्विंशतिसमस्य
 तं अतिभूर्य्ये जुने दितं ॥ अष्टाविंशतिसमन्दे वं कुरु
 तीशानमोस्तुते ॥ २६ ५ हकार सका ॥ त्रिंशजति ॥ हृदया
 दितं संपूजयेत् ॥ पाद्यादि ॥ लयाङ्ग ॥ पञ्चोपहार पूजा ॥
 वति ॥ हर्षवति गृह ॥ स्थाहा ॥ दीप दीप जाप ॥ स्तोत्र ॥

२५ अष्टसंहार रूपं स्थितिमपि भुवनं । सर्वदेवो मय
 त्यंत्वं सर्वं सिद्धिहेतो अशुरसुरनर सावका सिद्धि कामं
 । सर्वकर्मोधिकारि सकलगुरुमयं आदिमध्यप्रसक्तां ॥
 संसारसारहेतोस्त्रिभिरहरहरं स्तोत्ररूपं नमामि ॥ १ ॥
 तेचरूपजा ॥ अत्रगंधादि ॥ अलोरा विसर्जनं ॥ इत्यादि
 दीप पूजा यागार्चनं ॥ ॥ तदंतरं भुमनादि प्राशनं
 विधिवक्षे ॥ श्रीसम्वर्ग दीप भुजनं ॥ ॥ कालिचतुर्वि

संहय ॥ दीपविसेहय ॥ ॥ अमृतं जेवहिस्ते जेसर्वभासेनिराम
 यं । सामर्थ्यं कामग्रहणं मन्त्रमन्त्रे जु होय ॥ ॥ जनादिषो वसंका
 सं अज्ञानतिमिरापेहं । भुक्तिमुक्तिप्रदं दीपं भक्षयामिसदोदि
 तं ॥ जायते ॥ ॥ ऐं ५ अमृतं अमृतोद्भव अमृतसंभवाय यजुकु
 भिके हुं ह्रीं हुं स्वाहा ॥ ॥ पात्रशेवा ॥ श्रीमन् देवदेव शेषरविप्र
 विसृज्य अमृतं प्रो वितं क्षेत्राधीश्वर योगिनो गणेश महासि
 ॐ : समाराधितम् ॥ आनन्दार्णवकं महात्मकमिदं श्रीमन्त्रि

खण्डासुतं तत्पीप्रयमंसमस्तजगतां सोख्यायवन्ममहे ॥
 ॐ अमृतं अमृतोद्भव अमृतवर्षिणि अमृतोद्भाय स्वा मा ३
 हा ॥ ॥ खेचरविसेहय ॥ महासमर्थसंभूतदिव्यमेला
 प्रकोद्भव ॥ नवद्रव्यसमायुक्तं कुविदे शान्तमस्तुते ॥ कुलिकं
 काकजम्बीससालभा ॐ श्रीभाषुणा ॥ ॥ खेचरं तस्य हृत्वा खे
 चरं जम्बीसुच्यते ॥ ॐ ह्रीं हुं स्वाहा ॥ ॥ पात्रशेवा ॥ देहस्था
 रिवलदेवता गजमुखा क्षत्राधिप भैरवा योगिनो वज्रका

अथक्षपितो भूता विशाचाग्रहः॥ अन्ये भूवरखे चरादिशिवरा
येता लकाश्चेष्टका सा पास्युः कुलपुत्रपिवतः पात्रसद्व
दिता॥ यं वायुतत्त्वं गुह्यमिच्छाह॥ ॥ भूवरविशेषहम॥ निर्मा
त्यनिर्मितेष्टश्च प्रविदेहमेधनं॥ प्रसादि कृतभोक्तव्यं कु
केशं नमोस्तुते॥ अस्वधेन शिवाख्यान भक्त्युक्तं मृगं मेव च॥ भू
वरं ते समाहूत्वा भूवरं जन्ममुच्यते॥ ऊं ह्रीं क्लीं स्वाहा॥ ॥
पात्रशेका॥ सर्वाश्राय नियतकलापकलितं कोलुहलं द्या

तनुं च भूवरमहद्वशं भूवररौ प्रलादिभिश्चेति॥ ध्या
तं देवगणैः परं मुनिगणैः मोक्षार्थिभिसर्वदा वन्दे पात्र
महद्वियमधुना चात्मा प्रबोधक्षमम्॥ लोपथीतत्त्वं ज
होमिच्छाह॥ ॥ जलचरविशेषहय॥ मय्यमासं महामो
सं भुक्तयं ज्ञानकं चरु॥ षट्प्रकारचरुदिव्यं कुक्कुकि केशं नमो
स्तुते॥ ऊं ध्रुवकक्षपशं रवश्च शिशुसर्पश्च मराडुकं॥ जलच
रं ते समाहूत्वा जलचरं जन्ममुच्यते॥ ऊं ह्रीं क्लीं स्वाहा॥

पात्रशेवा ॥ मयं मीनरसावहं हरिहरप्रसादिदेवार्चितं
 मुद्रामैथुनधर्मकर्मसुरपदं क्षारासतिज्ञाप्रयं ॥ मांसं
 शूकरमैथुनात्मनरेमैथुनं यदि देयुतं सर्वदेवमुनिष्व
 रैस्त्रिगुणं यावत्तृतीयं नमः ॥ मंजुलं तंजु होमि स्वाहा ॥
 शेखरवित्पहय ॥ ॥ आशा विज्ञासद्वैतसमयवर्चसे नै
 जोसिपियतेहीनं कुट्टिके दानमोक्तं ॥ तत्राद्यादिप्रि
 दापं

द्वात्रिंशत्परमहंसपरमानन्दोदयं दायकं श्रीसंज्ञपि

आयुर्लब्धं पलायनं विशेषतः ॥ सखरैतेसमाहृत्यासेष
 रज्जुममुच्यते ॥ जंहीं हं स्वाहा ॥ ॥ पात्रशेवा ॥ श्रीमन्म
 क्तपात्रमेवितरसं मत्सुं जयं जयते कामोक्तं घनरा
 जवैष्णवरणोदिव्यांगरागधितं ॥ शक्तिस्त्रीगिताप्रति
 मोहरहितं साधुत्वरं सांभवं मंदजं चारुमं पीठं पुरुषात्मनो
 मंत्रराजसहितं पात्रं चतुर्थं नमः ॥ रं वहुं तत्तंजु होमि
 स्वाहा ॥ ॥ सर्वचरूपजल ॥ शेखर ॥ भूचर ॥ जलचर ॥

सर्वचरवाले वामहस्तेन ॥ वामहस्तास्य जनानामिका
कुंहेन यंत्रातिरेकत् ॥ मध्ये त्रिकोणा ॥ बाह्ये षट्कोणा मंगल
॥ तद्बाह्ये अष्ट षट्कोनास्तुक्तानि ॥ चतुर्द्वार ॥ ॥
पूजानि ॥ मध्ये स सकारादिहकाराणां ॥ हकारादिसका
राणां ॥ यंतुस्तं यंतुस्तं यंतुस्तं यंतुस्तं यंतुस्तं ॥ मध्ये ॥ अ
ष्टौ वस्तु यतिशी ३ ॥ हृदयादिषट्को ॥ अष्टौ चतुर्को
ने गायत्री धा ७ जप ॥ आवाह ॥ मुद्रा ॥ रक्तपुष्पमोरो

हनं ॥ सर्वचरनमस्कारं ॥ सर्वचरभुमनं ॥ दीपदेष्टाया
य ॥ वाक्य ॥ सर्वचरनमस्कारं ॥ सर्वदेवनमस्कारं ॥ द
र्शनं पावनं पुन्यं स्पर्शनं पापनाशनं ॥ भुगं मोक्षमुखं
देवीलक्ष्मीसंपत्तिदायकं ॥ विद्यातृणांतिकात्रितयं सर्व
आयावमोचनं ॥ यो गिनी ह्राये ॥ योति मुद्राकेते ॥ शु
रुत्पत्तिकायवर्द्धयसेनकाय वीरजनवित्तं हरय ॥ ॥
अनेन विधिना मत्पुचरेयं समाहितं ॥ सर्वपापविनि

मुक्तं आश्रयति शान्ती जायते ॥ जपल्लेखमंत्रः ॥ ऐं ह्रीं विं ५ विं २ त्रि
उवनसिद्धे चन्द्रो पविनिष्कान्तो हुं ह्रीं फट् स्वाहा ॥ ॥
पात्रशेवा ॥ ॥ आकाशे दिवि भास्वसे तु भूय नैतत्कात्म
कं सुन्दरं चामुर्वेदसुधारसाक्षिमुदिते स्यात्तत्र यंत्राख्यं
तं ॥ मूर्तिप्रभमयं प्रसन्नवदनं शक्तिस्वरूपं भूर्भुवः फ
लोत्तरगमितं यत्र जगतां वश्यं परयोगीनाम् ॥ हे आका
शात्मनो गुह्यमिच्छामि ॥ निजोष्ट्रं कृत्वा ॥ नमस्कृत्य ॥
उत्सारणं स्वस्त्यस्तथा ॥ अउजालमेतत् ॥ कुञ्जितपाये गिनी हय

महापात्रभुजनं ॥ ॥ यासां शक्तीत्यादि ॥ अभिशेष उं का
 रं वायुवीजमित्यादि ॥ अराज पात्रयो गिनी आदिन स
 र्ववीरजनपात्र उपदेहयेत् ॥ इच्छाज्ञातीत्यादि ॥ ॥
 शिखा ॥ ॥ ॐ हूं ह्रीं ह्रूं विष्णवे नमः ॥ विष्णुसर्वकारिणी स्वा
 हा ॥ ॥ पात्र शेषो ॥ मन्त्र मीकृत मन्त्र क लिमल
 हारं मह शेषं भुक्ति मुक्ति प्रसन्न शक्तिवदन सर्वोत्तम
 सत्रयं ॥ वर्ण बोड शब्द दशकला ज्ञान प्रदस्य अरं पात्र

तारमयं पावित्रजगतां वश्यं परं योगीनीं ॥ ॐ आत्मतत्त्वा
यस्वाहा ॥ ॥ द्वितीयं भुवनं ॥ अर्द्धपाक ॥ सन्नानभु
त्र ॥ स्थामारका ॥ ॥ शिरवा ॥ ॐ ॐ ॐ ॐ मय २ स्वाहा ॥
पात्रशेवा ॥ तत्त्वं तत्त्वगुणात्मवर्णयुगलं लीनं गतं नि
मीलं मृत्युसर्वचराचरं तिसृधिया स्वाहा मनुष्याय ॥
विद्याविद्यमयं पवित्रं जगतां मातृ मे श्वस्य तां पात्र
तारमयं पावित्रजगतां वश्यं परं योगीनीं ॥ ॐ विद्यानि

तत्त्वाय स्वाहा ॥ ॥ त्रितीयचक्र ॥ कंच ॥ मायाकुण्डली
ति ॥ शिरवा ॥ ॥ ॐ ॐ ॐ ज्वल २ स्वाहा ॥ पात्रशेवा ॥
सर्वकन्दकरं सारशिवपदं सर्वार्थसंपत्प्रदं सा प्रोक्ष्यार्थकरं समस्ता
सुखदं धानानविधं सतम् आयुः कान्ति यशो विवर्द्धनकरं सं
सारमोहहृदीं पात्रं लक्ष्मिगुणोत्कर्षचक्रवर्णमं प्रोक्ष्य प्रतापं भू
जे ॥ ॥ ॐ शिवतत्त्वं जेतुं मि स्वाहा ॥ ॥ शिरवा वयो धिनी
वनेहा विधि स्वाहा ललाय ॥ त्वमति परमकिले इति योगीनी
धारो मुदितेति शिरवा ॥ ॥ त्वं नालोसा यायु माराशामयाय

ASPA AF 2195

5134

2270 I

63/23

ASHA ARCHIVES

SHR

2270 I

तामुलभक्षणां ॥ वीरजनकुं ॥ दिक्षात्मकोसकलेसं
मुष्टयाय ॥ श्रीसर्वतो ॥ त्रिभुवमहासायातितयाग
कोचायके ॥ सत्रसंतुस्तुलङ्गव ॥ ॥ धनप्रतिभाज
नयाके ॥ चरुसकलेरुचिभाय २ कायाय ॥ वीरजन
याकोसंविभाय २ कायायभोसधुडायतये ॥ प्रतिभा
जनते ॥ इत्यादि ज्ञानकावतराचारानहयके ॥
जजमानस्य वीरजनयाहुं पनेमण्डलदयकाय देवते
भोसकाउप्रतिभाज ॥ १ ॥ सय ९

भोसबोऽप्रतिभाजनस ॥ वासयावके ॥ अथादि ॥ अमुक
 गोत्र अमुको देवा बौधायनपिण्डी सपिण्डी सपिण्डीकरा
 वा सायनचर्याकं वा आहुति अमुकनाम सत्तुस्तत्सर्वदेवा
 नां अग्रे भागतिवेदयेत् ॥ आयाच पितरौ देवभुञ्जते
 प्रतिभाजनं ॥ अस्मन्न विसर्जनं वाऽनव ॥ कुलपिण्डसंस्तु
 ये ॥ ॥ यजमानेन हस्तलक्ष्मणां गोष्ठेन मध्यपा
 त्रसमुत्तव ॥ कुलपिण्डसति लोदके विषयक ३ ॥

मंत्रा ॥ ऐं पुसमस्तामंत्रुषीठे त्वादि ॥ ऐं पसा सुरादेवी
 आनन्द भै रवी पितरौ देवा अमुकगोत्र ॥ अमुकना
 मब्राल्लोके संप्राप्तिमोक्षं कुरु २ स्तु ॥ त्वाहा ॥
 ॥ ॥ ऐं पसा सुरादेवी आनन्द भै रवी पितरौ दे
 वा अमुकनाम विष्णुलोके संप्राप्तिमोक्षं कुरु
 २ स्तु ॥ त्वाहा ॥ ॥ ऐं पसा सुरादेवी अमुको
 देवा अमुकगोत्र अमुकनाम रुद्रलोके

संप्रपि मोक्षं कुरु ॥ स्त्रिया ॥ ॥ स्त्रोत्रयाय कपूरया
 य मतायाऽगताया ॥ वि ये ॥ के गताय मोक्षं लोहाने
 पाये पुंकास्तोत्रयो ॥ जगताय ॥ अत्रैव विधिना चै
 व आयने पितृदेवता ॥ भुंगोरोसर्वदेवानां पितृभित्तु
 ण्डिकाय च ॥ पितरोसर्वदेवाय पितामह उ पितामहान्
 ॥ शांतिगोत्रं च सर्वमिदं यथाये वाभ्यवास्तुता ॥ स वेष्टा
 मवन्तु प्राप्तिं तत्प्रापि पितृदेवता ॥ उ नानि कंस सर्वा

शिवायदिष्टि ५ मदिष्टि ५ कं ॥ सर्वे ते पूर्णाय क्षम्यतां पि
 तृदेवता ॥ ॥ ५ व्याजोताति सर्व अतिवहति पिसि
 तं भक्ष्यमोत्रा नित्युक्तं । भक्ष्यमोत्रा पितृभिः । त्रयकुरु
 सहितं सप्रवसौ पितृयुक्तं । संतोषा सर्वभावं पितृगणै
 सकलं भैरवो सर्वदेवान् । समानं वृद्धिरादौ सकला
 सुरवभवं वृद्धिं तेराजालक्ष्मी ॥ पिता पितामहश्चेति ॥
 इशानविभु कमलेति ॥ ॥ क्षमालुति ॥ मंत्रहीन

श्रियाहीनं द्रव्य हीनं नयेव च । तद्यत्सर्वं सर्वं सं परीक्ष्य तौ
पिता रोजनौ ॥ ॥ अर्चते धुनङ्गव्ये ॥ दक्षिणा विषयप्राप्त
राजुक्ता ॥ ॥ यजमानपुनिष्ठा ॥ सग्रा मेरो गपी ठेत्या
दि मालसायाय मुमालसा मया य ॥ ॥ समया न कमा
र भेत् ॥ जयत्रिका पठेत् ॥ महापात्र समान ॥ महापात्र
अभिषेक ॥ पात्र अक्षौ मुखं कृत्वा ॥ ॥ कुल पिरुत्त सप्रा

प्रार्थनायाय ॥ नमस्तोषित देवेभ्यः सर्वपाप प्रमोचनी ॥
नृपि भययथागच्छ देवद्वेपि मुदा न्विता ॥ सुखी भव
सदा कालं मुक्तिं वापि भवेत् कवे ॥ तस्माच्च कृपया देव
सुदृष्टिं हृत्पता मिह वारयन् भव संसारे मुक्ति मार्गं प्र
दा भव ॥ ॥ पिन्दु वि सज्जनम् ॥ ॥ पिरुत्त नय ॥ पिरुत्त
पात्र सत्ता मिये ये वास्माकं ॥ ग्राह्य वारस्व वा कडु प

त्रिरावम्

यके ॥ आयुषं बाधनं विद्या ॥ जलपात्रं अचो मुखं का
रयेत् ॥ ॥ न्यासं स्वेष्टदेव्यास्मरणां जपं ॥ ॥ मंत्रां लवि
स्तु ॥ एकानेक ॥ अग्नेर्पूषं गतं ॥ यतिस्तु ॥ संहार
मुद्रा ॥ विराचम् ॥ न्यासं लेकाय ॥ साधियाय ॥ ॥
योगिनीपूर्वादि सर्वाहंका अवत्रयवाक्य ॥ योगिनी आ
दि नगरासकलेरुके ग्ये जो ज्ञाय हात जकार पडवे ॥

व२

मंत्र ॥ प्रविर्त्तै रवीचक्रे सर्ववर्णा दिजायते । नी
रुर्त्तै रवीचक्रे सर्वेणां पृथक् पृथक् ॥ वीरचक्र
सर्वेणां सर्ववर्णादि जायते । चक्रांशे सर्वे
वीर्णां सर्ववर्णा पृथक् पृथक् ॥ क्षत्रधाय आशा २
भाय ॥ जलं करतये ॥ ॥ विरुडनदि प्रवाहयाय ॥
स्तान्त्रियाय संध्याभुनकावय ॥ प्रसादकायाव ॥ वी

१ भोज्य ॥ कलरय मुजा ॥ कलरय प्राये ॥ अनेकुलपिण्ड
 धयगुयायकृति ॥ ॥ कुलपिण्डपयिजायजमानसु
 द्विआदिनसोवनयायमहु पिण्डदकोजापुंकापिण्ड
 बुयके पुंकास्तानसंध्या पुंकाति प्रसादकाय वीरभो
 जनसहयायापरिवाति धये ॥ ॥
 सम्यक् २२ ७ नितिज्यवनट कृष्ण ७ १ समाप्त शुभम्

आसनपूजन आकारशक्तिमन्त्रासनायनमः ॥ ४

श्रीगणेशायनमः ॥ श्रीपीताम्बायनमः ॥ ॥ आदौगणपतिपूजा ॥
 दिङ्माणाभावरणं कृत्या यगलादीपमाचरेत् ॥ मन्त्रलेखगला
 दीपं कथं मूलदीपकं ॥ ॥ तत्रादौ त्रिगुणम् ३ ॥ शिखाचं
 नं ॥ मूलं मुखार्थं शिरसाथैवषट् ॥ ॥ भूमिं विन्दुत्रिकोणायुज
 चतुराश्रितिरप्य ॥ देवीं स्थाप्य र्धं व्रजा ॥ तत्रैकमणभूतात्सा
 रणं कुर्यात् ॥ सिद्धार्थलाजापुः शतिलभश्मजलाक्षतिर्नैव
 चयामुद्रेशदिशुः शिषेत् ॥ मूलं अष्टायफट् अयस्य

सुरेभूतेति॥ ततोपपत्तिजतिनापठेत्॥ ॐ देवि प्रमदमहि का
सुरदानेगीतेलीनेसुतसुजगतीहरियोगनिद्रा॥ तत्रसु
तरिमधुकेतुभदानहोत्रेदोरेडुःखहरणोत्तराणि न मेते
हं॥ इत्यर्थप्रणामेयत्॥ त्रैलोक्यम्॥ प्राणायाप्रणवाप्यं कुर्या
त्॥ तत्रादौ वगलमुखीयास॥ मूलं॥ ॐ अस्य श्रीवगलामु
खीवृत्तास्त्रविद्याया भगवान्नारदः प्रविरनुष्ठप्सुः श्री
वगलमुखीदेवताहोवीजं स्वाहा शोकीवुद्धिनाशाय २जि

ह्रींकीलय २ कीलकं पुरुषार्थतत्तुष्टयसाधने विमियोगः
इति त्रय्यादि पूर्वकवराहुं न्यासं कुर्यात्॥ ॐ ह्रीं अङ्गुष्ठाभ्यां
नमः॥ वगलामुखीराजोनीभ्यां स्वाहा॥ सर्वहृष्टानां मध्यमा
भ्यां वषट्॥ चोर्वं मुखं सूर्यय अनामिकाभ्यां हं॥ जिह्वां की
लय २ कनिष्ठकाभ्यां वौषट्॥ वुद्धिनाशाय २ ह्रीं ॐ स्वाहा
करतलपट्टाभ्यां कटु॥ ॥ सर्वहृदयदिभिः॥ ॥
अथ वराहुं न्यासः॥ ॥ ॐ ॥ मूढि॥ ह्रीं॥ भाले॥ वं प्र॥

गं॥ दक्षनेत्रे॥ ह्रीं॥ वामनेत्रे॥ मुंदक्षकर्णे॥ त्वी वामकर्णे॥
 नां ओं॥ वां अधरे॥ नैं चिबुके॥ मुं गले॥ खं दक्षवा
 हो॥ तं दक्षकूर्परे॥ नं दक्षमणिवंधे॥ यं दक्षां गुलिस
 ले॥ जिं दक्षां गुलिये॥ ह्रीं वामवाहो॥ कीं कूर्परे॥ लं मणि
 वंधे॥ यं अङ्गुलिमले॥ कीं अङ्गुलिये॥ लं दक्षो॥ द
 जाहो॥ हूं गुले॥ हिं दक्षलिमले॥ मां पादां गुलिये॥
 रं वामो॥ यं जानो॥ हूं गुले॥ उं पादां गुलिये॥

आहा वामपादाङ्गुलिये॥ नमः सर्वं सर्वदे॥ ॥ ततः सांजा
 न्यायस्थायनी॥ ॥ विष्णुत्रिकालाष्टतचतुर्मुखिलिरव्य॥
 तत्र पूजय॥ ह्रीं आधारो नमः॥ ॥ फादि त्रिप्रादिका
 उक्षालयनत्रुस्थाययेत॥ नमः इति जलपूरयेत॥ उक्तीनि
 धारयुं इति॥ क्रौं अङ्गुलीमुदया आवाहं पूजयेत॥ तत्र
 तेन चारत्रे अक्ष॥ चारत्रे वतर्कनमः॥ ह्रीं गरुडयेन नमः॥
 क्षा क्षत्रपालाय नमः॥ वां वदुकाय नमः॥ सौं सोमियाभ्यां

मः॥ ततो विरोधाद्यस्थापनस्यावाप्ते पूर्ववन्मराडलं हस्त्या प
जयेत्॥ मं वृद्धि मराडलस्य वृद्ध्या विधादि दशकलात्मने नमः॥
फदिति राक्षसप्रक्षाल्य तदुपरि स्थापयेत्॥ अर्क मराडलाय द्वाद
शकलात्मने नमः॥ मूलेन उदकां पूरयेत्॥ पुनः पूजयेत्॥
ॐ उगं म मराडलाय अमृतादिषोडशकलात्मने नमः॥ त
अक्षुशमुद्रया तीर्थ आवाहयेत्॥ गुं गेव ये मुने चैवेति॥
नम इति चन्दनाक्षतपीतपुष्पदुग्धगजमर्दः पूरयेत्॥

षडंगेन पूजनीयतु संस्कार मत्स्यमुद्रया छाय मूलेन वि
जयेत् वृद्धेन मुद्रा॥ २॥ रं रं रं मुद्रां उदरी॥ तदुदके मदे
यं वा प्रजापकारणात्मानं स्थयेत्॥ ३॥ उं ह्रीं च गला मुरयी
विनं रे पीताम्बरस्थि धीमहीतमि॥ पुनर्दृष्टी प्रयोदयात्
मूलेनात्मा पूजनं॥ मूलेन व्याञ्जलि ३॥ शिरसि पीठं मुनी॥
ॐ मराडुकाय नमः॥ काला विरुद्राय नमः॥ त्रिंशं धारशक्ति नमः॥
॥ कृष्णाय नमः॥ पद्मे गाय नमः॥ अनन्ताय नमः॥ वराहाय

नमः॥ पृथिव्ये नमः॥ सुधास्ये नमः॥ रसु दीपस्य नमः॥ सु-
वर्णशैलस्य नमः॥ रत्नमूर्त्ये नमः॥ मन्दनोद्यानाय नमः॥
फलपट्टस्याय नमः॥ तृप्तये मरणा मरः चरत्तर्क देवताये
नमः॥ दिक्षु॥ वस्त्राय नमः॥ जलस्य नमः॥ वैराग्याय नमः॥
॥ ऐश्वर्याय नमः॥ ॥ विदिक्षु॥ अक्षय्याय नमः॥ अज्ञाय-
नमः॥ अक्षय्याय नमः॥ अक्षय्याय नमः॥ सर्वतत्त्व-
स्तकपनाय नमः॥ आनन्दकन्दाय नमः॥ सिलीसाय नमः॥

॥ प्रहृष्टिमयपञ्चमे नमः॥ विष्णुमयपञ्चमे नमः॥
पञ्चाशद्वर्णावीजाद्यातय रूपकालिकाय नमः॥ ओषध-
पीठाय नमः॥ पुनः प्रतासनाय नमः॥ निष्प्रतासनाय न-
मः॥ रुद्रप्रतासनाय नमः॥ इन्द्रप्रतासनाय नमः॥ शक्र-
प्रतासनाय नमः॥ उग्रप्रतासनाय नमः॥ महाप्र-
तासनाय नमः॥ महाप्रतासनाय नमः॥ महाप्रतासनाय नमः॥
समाय नमः॥ ॥ वन्दे ॥ ॥ वन्दे ॥ ॥ वन्दे ॥ ॥ वन्दे ॥ ॥ वन्दे ॥

अनसमिभं ॥ चतुर्भुजां त्रिभुजां च नमः ॥ वासन संस्थिता ॥ सु
दृढं दृढिगं गारां वामे जिह्वं च जंघं ॥ पीताम्बरं च रं सडं
चुर्गं पानं पयो वरां ॥ हेमं कुराडलं भूषणं च वामां च वुडां द्विह
न वारया म ॥ पीताम्बरं च नमः ॥ चतुर्भुजां च नमः ॥ सने स्थिता ॥
मये ध्यात्वा तु देवशि शत्रुतां भनका ॥ रं ॥ मये ध्यात्वा तु देव
मणि मराडपरत्नं लुप्तं ॥ सिंहसूनाय ॥ गुतां परिपतिव
पीताम्बरं च रं सडं ॥ वेभू विना ह्री देवी न ना मिधुत

मुद्रालं वैरि जिह्वी ॥ अङ्गुली गुमादाय कोरुगे देवीं वामे नश
त्रुर्परि पीडयामि ॥ गड विघाते न च दक्षिणे लपीताम्बरं
घातिह भुजां ममामि ॥ ॥ इति ध्यात्वा आवाहयेत् ॥
मूलं ॥ हे वगला मुरि वइहा गच्छ २ इति तिष्ठ अत्र समिहि हिमो
भव अत्र विस्था न कुरु मम पुजां गृह्णाता ॥ इत्याद्या हलादि
कृत्या यत्रे जाण प्रतिष्ठां कुर्यात् ॥ ॥ ३ असे श्री गारु
तिष्ठा मम वस्य पुत्र विष्णु रुड नाथ यः नम्यते सा मानि

वृंदांति प्राणा शक्ति देवता ओं वीजं श्री शक्तिः श्रीं कीलकं प्राणा
 तिष्ठामातये ओं पदिति योगः ॥ ॥ ॐ आद्रीं कीं यं ४ शं ४ क्षं
 हं तसो हं श्री पगला मुरवी देव्या प्राणा इह प्राणा से जीयय
 रं सर्वे डि यमि सर्व वा ज्ञान श्वेक्षु श्रोत्रे चोत्तर सततं पञ्च इ
 ह्युच्छु सुखं चिरं तिष्ठेत् सुखात् ॥ ॥ मूलन पंचविंशति वा
 रं अथैत ॥ पुनः पायादिभि रूपायै पूजयेत् ४ पदी पृथः
 गोपनीका द्युतस्य आतनिकं च कारयेत् ॥ ततो देव्या

धामे विदुः त्रिभङ्गाद्युतं चतुरस्रं मराठे स्वर्गादि पत्रि
 नैवेद्यं शोभ्य ॥ अथैतानि श्रुतां ॥ नेत्रेन विक्षर्या ॥ न
 वचनाय गुरुतन ॥ विजुमुद्रया मृत्तिष्ठात् ॥ तत्त्वमुद्रया
 धरं पुनः मन्त्रेन ३ आख्यायक ॥ इति रक्षारं चक्रं
 दुवाछेद्यं द्विचित्रं पुष्पाक्षिपेत् ॥ पंच प्राणा इति मन्त्रं
 यो प्राणा इति द्योतयेत् ॥ कलि वानपि को गुह्यं
 मूलं प्राणा यस्याही ॥ ततो नीमं यं मागुच्छेत् ॥ मूलं ॥

अं पादो यस्यासु ॥ मध्यमा ता नि का मु छे न ॥ मूलं ॥ वाताय स्वाहा
॥ अतिष्ठ पञ्चानुरंगुलिभिः ॥ नूतने ॥ इक्ष्वा य स्वाहा ॥ सर्वा
ङ्गुलिभिः ॥ मूलं ॥ समानाय स्वाहा ॥ मूलं पुनरहं मनीये
ने नः ॥ मूलं पुनः फलता मूलं मिष्टानं नमः ॥ मृत्यवा त्वं
नमः ॥ ततश्च रक्षता एतापुषो र्वर्ष्या उति मूलं दत्ता ॥ प्र
त्युषामि नु दं प्र दक्ष ॥ तत तत्तत्तत्तत् ॥ मूलं आत्मनस्तथापि
तीव्रगता सुखी तर्पयामि नमः ॥ मूलं विद्या तत्तत्तत्तत्

नीवगता सुखी तर्पयामि नमः ॥ मूलं ॥ स्वर्गाय स्वा
पुतिवगता सुखी तर्पयामि नमः ॥ इति विचारं संत
प्य ॥ ॥ ततो आचारण पूजां वाच्यते ॥ विज्ञे ॥ मूलं ॥
प्रितं पञ्च ॥ त्रिको तो ॥ ॐ ह्रीं वगता सुखी तत्तत्तत्तत्
यामि नमः तर्पयामि नमः ॥ ॐ ह्रीं वगता सुखी का
ली पूजयामि नमः तर्पयामि नमः ॥ ॐ ह्रीं वगता सु
खी तर्पयामि नमः तर्पयामि नमः ॥

ॐ ह्रीं ॥ ॐ सुभगायै नमः ॥ ॐ अग्नेये ॥ ॐ ह्रीं भगमा
सिन्धवे नमः ॥ ॐ इशाने ॥ ॐ ह्रीं भगवतायै नमः ॥ ॐ पश्चिमे ॥ ॐ
ह्रीं भगसिन्धवे नमः ॥ ॐ नैऋते ॥ ॐ भगनिपातिने नमः ॥
वायवे ॥ ॐ ह्रीं भगमायै नमः ॥ ॥ अस्तु पत्र ॥ ॐ ह्रीं
अहोरे ॐ आ अक्षिता इ मेरुकाय नमः ॥ ॐ वं माहे अक्षिता
दि ॥ ॥ पुनः पूर्वदिक्केशे ॥ ॐ ह्रीं जगत्पते नमः ॥ ॐ दादि
ॐ ह्रीं ॥ ॐ उशपत्रे ॥ ॐ ह्रीं नमः ॥ ॐ आ

सोपिते नमः ॥ ॐ ह्रीं इति नमः ॥ ॐ ह्रीं इ मेरुहिमे
नमः ॥ ॐ ह्रीं इ वरुणायै नमः ॥ ॐ ह्रीं इ अचलायै नमः ॥
ॐ ह्रीं अचलायै नमः ॥ ॐ ह्रीं अचलायै नमः ॥
ॐ ह्रीं अचलायै नमः ॥ ॐ ह्रीं अचलायै नमः ॥ ॐ ह्रीं अचलायै नमः ॥
ॐ ह्रीं अचलायै नमः ॥ ॐ ह्रीं अचलायै नमः ॥ ॐ ह्रीं अचलायै नमः ॥
ॐ ह्रीं अचलायै नमः ॥ ॐ ह्रीं अचलायै नमः ॥ ॐ ह्रीं अचलायै नमः ॥
ॐ ह्रीं अचलायै नमः ॥ ॐ ह्रीं अचलायै नमः ॥ ॐ ह्रीं अचलायै नमः ॥
ॐ ह्रीं अचलायै नमः ॥ ॐ ह्रीं अचलायै नमः ॥ ॐ ह्रीं अचलायै नमः ॥

ॐ ह्रीं
ॐ ह्रीं

ॐ ह्रीं जैरव्योम नमः ४
॥ अष्टांग ॥ इत्यादि १० ॥ तद्विद्युत्तादि १० ॥ ॐ ह्रीं
जैरव्योम नमः ॥ ॐ ह्रीं दक्षिणाकाशेन नमः ॥ ॐ ह्रीं दुग्धलास्ये
नमः ॥ ॐ ह्रीं निम्बाम्बायै नमः ॥ ॐ ह्रीं किङ्करीये नमः ॥
ॐ ह्रीं भृषनेभ्योनमः ॥ ॐ ह्रीं वृन्मायसे नमः ॥ ॐ ह्रीं
मानकेभ्योनमः ॥ ॐ ह्रीं मानकेभ्योनमः ॥ ॐ ह्रीं
गङ्गापुत्रीदेवे नमः ॥ १० ॥ पूर्वादि द्वारे ॥ ॐ गङ्गा
पतये नमः ॥ ॐ वैष्णवकाय नमः ॥ ॐ श्यामेभ्योनमः

ॐ श्रीं भवपात्राद्यनमः ॥ ॥ त्रिकोणा ॐ ॥ लिहा
सतायनमः ॥ पञ्चासनायनमः ॥ सदासनायनमः
॥ मल्लिकार्जुनपुष्पाञ्जलित्रयंदत्वा ॥ षडंगनसंपूज्य
चन्द्रनाक्षत्रपुष्पांदत्वा ॥ धेनुयोनौ नक्षत्रयोनौ पुङ्गव
पुद्गल ॥ ॥ बलि ॥ ॐ ह्रीं वगलासुखीदेवी स गता
परिवारे नमः सर्वविघ्नविनाशाय ॥ सर्वशान्तिकर

इमोपूजांयुतिंशुद्धंस्वाहा॥आवाहनादि॥ओमिन्न
द्रु॥॥तर्पणम्॥३॥चन्द्रनादिभिस्सप्तशतत्रयपुष्ट
पंतैवेष्टिता॥आत्मानंदत्वा॥॥स्वयंआचम्य
स्पर्शैस्तैः॥॥३॥पुष्टव्यति॥॥१०६॥
अपममयागम्॥इदंजपेगुह्यंस्वाहातिदेव्याव
मंकरेदत्वा॥॥३॥कथयसतनामसहस्रनाम
सोवादिपठेत्॥॥ततश्चाप्येकिंदुत्रिकारा

पुष्टवपुरेभुमिर्मात्स्यपूजनं॥आचमनं॥षडंगमासं
कृत्वा॥॥देवाचारिणोदकादिगृहीत्वाआगतस्त्रिव
गल्लामुखींस्त्रितंविभाज्य॥॥क्षमस्वेतिउं॥वत्प्र
राग्य॥॥इतिषगलासुर्यपूजा॥शुभम्॥॥

[illegible]

श्री लक्ष्मण गंगा राय उन्मादिकुरु मंगोपहारिणी ह्रीं ह्रीं ह्रीं ह्रीं
ह्रीं ह्रीं ह्रीं ह्रीं ॥ १० ॥ चतुर्गताक्षरी ॥ ॐ आं ह्रीं क्लीं ॥
हृदये ॥ ॐ आं ह्रीं क्लीं हूं हूं हें कीं श्रीं ह्रीं वगला मुखी आवेशाय २
आं ह्रीं क्लीं प्रसादात् रूपायै हि २ आं ह्रीं क्लीं मम हृदये आवाह्य २ सानि
ध्यायितुम् २ आं ह्रीं क्लीं मम हृदये चिरंतनम् २ आं ह्रीं क्लीं हूं फट् त्र्याहा ॥
६० वर्णा ॥ ॐ ह्रीं वगला मुखी विष्णवे पीताम्बलये धी महोत्तमायै
उमदिनी प्रसादयात् ॥ गोसुत्री ॥

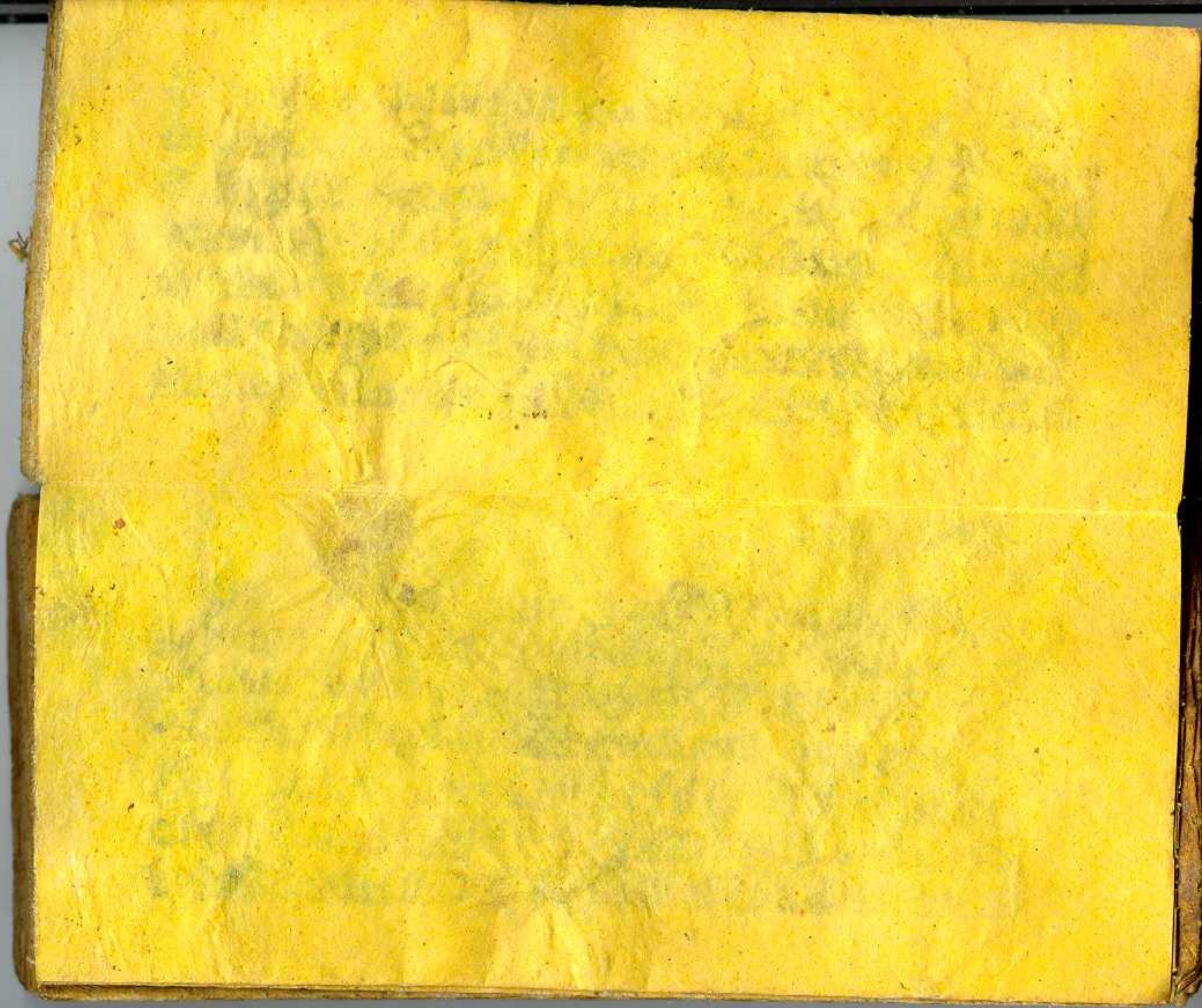
ॐ ह्रीं वंगलामुखीसर्वदुःखानां वाचं मुखं स्तंभय २ जिह्वां कीलय २ उ
द्विं विनाशाय २ ह्रीं उं स्वाहा मूल ॥ ॥
अथ विशाखा धर्मस्य पत्रं ॥ सामाग्न्या यो दत्तं न शरयो द्द केन वा
मिषिच्य ॥ मध्ये विंदु त्रिकोणाच्चतुसुं पिबिष्या ॥ चतुरस्रे स्य
दक्षे ५ उद्यानपीठाय नमः ॥ दक्षिणावर्ते न जालं करपी
थाय नमः ॥ पूं पूर्वागिरिपीथाय नमः ॥ कोकाम्बु
पीथाय नमः ॥ त्रिकोणे ॥ ॐ नमः ॥

नमः ॥ श्री नमः ॥ त्रिदो आधार शक्तये नमः ॥ मंत्रादि
मंडलाद्यदशकलात्मने नमः ॥ मंडलं संपूज्य ॥ तमेति त्रि
पदिकां प्रक्षाल्य ॥ ॥ मण्डले स्थापयेत् ॥ पश्चिदि
पात्र प्रक्षाल्य ॐ ह्रीं इति कर्पूरचन्दनेन लिप्यत उपरि
सिंदूरं त्रिकोणां ह्रींकारं लिखत ॥ ॐ ओं ह्रीं को ह्रीं
फट् इति वृषयेत् त्रिपदिकापरिस्थापयेत् ॥ अर्क
मण्डलाद्यदशकलात्मने नमः ॥ ५ व्यं परयेत् ॥

प्रातःकावागिनि लोमविलोमेन ॐ ह्रीं श्रीं वगलामुखी दे
 व्या विशोषार्थं पात्रं समतेन दुष्येन पर्यामिनमः ॥
 इति पात्रं आपूर्य पठेत् ॥ श्रीते विमथनोद्भूतवत्
 तात्वं सुधारुजि ॥ आपूर्य पात्रं मवायास्तिस्रर्षी पूज्यं पि
 णि ॥ ॐ सोममण्डलाय शत्रुशक्त्यात्मने नमः ॥ सं
 पृज्य फट् इह तातानि धेहि कादिभिर्दिग्बन्धनं कृत्वा

॥ हूं इत्यवगुं ध्रुवं ध्यामतीकृत्य ॥ ऐ इति ध्याति मुद्रा
 दर्शयेत् ॥ ततस्तस्मिन् मुद्रया ध्याय ॥ ह्रीं श्रीं अमृते अमृते
 ध्रुवे अमृतं वसिष्ठिः ॥ ह्रीं अमृतं आवय रसे सुषे सर्वत्र
 पं मोचय चतुरत्य दायिनि सिद्धिसामर्थ्यं देद रमसि
 रेवरी मुद्रा प्रकटय र हं फट् स्वाहा ॥ इति शापविम
 व्य ॥ वौषट् पुनः दधानं वौ नि मुद्रा दर्शयेत् ॥ ततो त्रिकूट

मुद्रा पंचरत्नं पूरयेत् ॥ गूंगागारत्नेभ्योनमः ॥ खूं चरु
रत्नेभ्योनमः ॥ मूं धर्पिरत्नेभ्योनमः ॥ पुषातालरत्नेभ्यो
नमः ॥ मूलागरत्नेभ्योनमः ॥ पुननत्समुद्रयद्रुद्र
दशवाजयेत् ॥ ह्रीं श्रीं क्लीं १० ॥ इति विशेषाद्यास्थाप
नाम् ॥ ॥ आत्मपूजां कृत्वा ध्वजवलिद्वारात् ॥







अथशक्तिपूजा॥ ॥स्वनिस्पवत्याथार्घ्यविशेषार्घ्यसंस्थाप्य॥॥
सामास्यार्घ्योदकेनभूमौसिञ्चयेत्काकिदुत्रिकोणवृत्ताचरु
सुविहिरव्यपूजयेत्॥ ॥कींहूँसर्वशक्त्यात्मनायसिद्धेश्व
रीपीठायनमः॥राक्षिपीठमभिषंभयेत्॥कींभगवत्पेवि
अहेहूँयोनिमाहिषेधीमहित्वोशक्तिप्रबोदयात्॥ततो
शक्तिमुपवेशपावाहयेत्॥कींहूँहृँहृँहृँभगवतिआद्या

दक्षिराकांतिकाशक्तिपीठे सा त्रिध्व मावेशयत्यामहं वहा
मिशक्तिस्वरूपिणी उं श्रीं ह्रीं स्वाहा ॥ इत्यावाह्य ॥ ततो दक्षिणे
दक्षेनाभिषिञ्चेत् ॥ ॥ क्रीं हूं ह्रीं कात्पे नमः ॥ इमांशक्तिपवि
त्रीं कुरु स्वाहा ॥ ह्रीं ॥ इति शो क्त्या त्यात्मानं चिञ्चेत् ॥ ततः
शक्त्यङ्गन्यासकारयेत् ॥ ॥ अस्य श्रीशक्तिमंत्रस्य गोम ध्वम्
षिविहृतिस्त्वं शक्तिरूपा दक्षिराकांतिका ये देवता क्रीं

वीजं स्त्रीशक्तिः ह्रीं कीलकं शिवशक्तिसाम्यत्वे चिन्ति योगः
॥ ॥ ततः कर एव इङ्गं न्यासं कुर्यात् ॥ स्त्रां अङ्गुष्ठाभ्यां नमः ॥
स्त्रीं तर्जनीभ्यां स्वाहा ॥ एवं च दीर्घे राकर षडङ्गं ॥ ततो शक्ति
मित्यात्मात् ॥ ॥ क्रीं कात्पे नमः ॥ शिरसि ॥ क्रीं कपालिने न
मः ॥ कपाले ॥ क्रीं कृताये नमः ॥ गते ॥ क्रीं कुरु कलाये न
मः ॥ स्वये ॥ क्रीं विरोधिने नमः ॥ वक्षसि ॥ क्रीं विप्रचिन्ता

येनमः॥स्तनयो॥क्रीडग्रायेतमः॥पार्श्व॥क्रीडगुप्रभाये
नमः॥कुक्षौ॥क्रीदितायेनमः॥नाभौ॥क्रीनीतायेनमः॥
योनौ॥क्रीघनायेनमः॥उरु॥क्रीवृतायेनमः॥भ्रूवौ॥
क्रीभावायेनमः॥जात्र्यो॥क्रीमुद्रायेनमः॥जंघे॥क्रीमि
तायेनमः॥पादयोः॥क्रीशिवशक्तसाम्यस्वरूपिणेनमः
॥हृदये॥इति सृष्टिनितात्पासः॥।प्रतिध्यायेद्यथा॥

ॐ धातुर्गोसृष्टिशक्तिर्जगदवदन्विधोऽर्थ्यरा
क्षिप्रविष्टोः॥शंभोःसंहारशक्तिरुपतिजनहृदि
पादराक्षिस्मरसा।ज्ञानेच्छाकर्मशक्तित्रिभुवनज
ननीसर्वगासर्वशक्तिःसर्वपाशादिशक्तिममह
दिवसति कातिका आदिशक्तिः॥॥ततोऽष्टशु
रीध्यालंकुर्यात्॥ततोऽष्टमंत्रेण वायादिभिर्वा

शिवाय नमः ॥ संप्रज्ययथाशक्ति देवि शरणं दत्वा ॥ कीं हिं जीं श
 मे तुमः ॥ इति मंत्रेण गुलकुलकुंभं शस्ये समर्पये
 र ॥ ॥ ततो मूलमंत्रेण ॐ ह्रीं ह्रूं सः सो हं त्याहाममुह
 दयं तव हृदये दधानु मम वाचं तव वाचं ममेद्रियेषु
 तवैषिष्याणि मम वाचं तु सत्त्वं पूरमात्मरूपिणित्याम
 ह्यं रिसन लये वक्तं स सदाहं सेवत्यं शिवशक्तिश

मरुस्यमापगोतदे कंसाधियात ॐ श्रीं स्वाहा ॥ ॥
इति कुलम्भशालाके समर्पणं ॥ ततः शक्तिं जात्रं दद्या
दद्यात् ॥ मूलं रघुहिमगव निपात्रं ब्रह्मरूपिणी शक्त
ने त्वाधित्वा ने प्रकटय श्रीं ॐ श्रीं आद्योदक्षिरा काहि
का शक्ति सत्त्वावतारे शक्ति देव्य २ शक्तिं शैव्य २
शक्तिं पायय २ सामरस्य रिद्धि देहि २ श्रीं ॐ श्रीं कुरु

संप्रदाय प्रवर्तने निगुह्य प्रवर्तने निशक्ति च त्रे श्वरी उह्योः
सौ. सा विध्वं कुरु २ स्त्री ३ हूं ३ फट् ३ नमः स्वाहा ॥ ॥
शक्ति पात्रं गृह्णां समये अंजतिं वधापठेत् ॥ ॥ ॐ शि
वस्य शक्तिं त्वमसि समया त्वं समपि नीत्य माज्ञा त्वं
दीक्षा त्वं मय मरिमादि गुरु गरां ॥ अविद्या त्वं विद्या
त्वं नसि मरिपल त्वं कितापदं दृथक् त्वं तव भगवति

नवीक्षामह मिमे ॥ ॥ शक्ति पात्र मिदं तु न्यंदी योते पिशि
तान्ये तं ॥ स्त्री हस्त सुभगे देवि प्रशो देहि हर प्रिये ॥ ॥
इति ॥ ॥ वीर पात्रं वीरः ॥ योगिनी पात्रं योगिनी भः
योग पात्रं उदात्मने ॥ गुरु पात्रं गुरो समर्प अञ्जलियं
धापठेत् ॥ ॐ आं भूपर मे श्वरं पर शिवं स एवाति सुक्ष्मं
गुरु सदी तं हस्त विग्रहं त्रिजगतीं सारं पर निम्ने लं ॥

अहेतुहृदयहृत्पदजननं श्रीदं विनेत्रं शिवं देवेन्द्रेः परिपू
 जितं भयहृत्सखिसत्तनन्दे ॥ ॥ इति राक्षसपञ्चादिसमर्प
 * ॥ तथा ॥ राक्षसं विवेदं पंवीति विष्टं उच्यते ॥ ॥
 ततो राक्षसोष दोनं ॥ मंत्र ॥ यत्तत्तुभ्यमृयादत्तं पीतरो
 षं कुलाभृतं ॥ त्वद्धनं तं हरिष्यामि त्वं विष्टं सदा मि
 ति ॥ ॥ सामान्यपूजायां नुशस्मादिभिर्न्यास्य च त्वपात्रं गृ

हीत्यादिपूर्वकृतवत्कार्ये यदि विशेषचक्रपूजायां तु दि
 वसेषु चैतन्वत्कार्यम् ॥ ॥ रात्रौ तु आरात्रिकं कुर्यात् ॥
 ययं वा शांतिं वा सुपक्वं पिष्टुं एसा जातिफलं लभ्य
 त्रिकं सुकर्तुं मधुं धर्मं गोदकं सर्वं एकपि रात्रिं
 त्यानत्रचतुरं तु संवाच्यं कुलं वा इमं रक्तं रोद्रं त्रिकं
 राक्षसां ग्राहिणं शोभं सा दीपं नवं वा सप्तं वा प

चंवा कूर्यात् ॥ पुनः सर्वजनेभ्यः प्रत्येकदीपं कूर्यात् ॥ त्रि
 क्रुद्रो भवति तलसर्वचरुं कारयेदिति काति वरु ॥ ॥
 नतो स्थात्पंच प्रशापत्रि कोरुं विहिरय्ये वरादित
 वचरुं संस्थाप्य शोधयेत् ॥ मूलेन सर्वक्षपफाडिति मं
 त्रेण सं प्रोक्ष्य फाडिति मंत्रेण संता घट्टनिति मंत्रेण व
 गुणवं वेतु मुद्रया अमृतं कल्प ॥ इति संस्कारः ॥ ४

अथ आरात्रिक नियेदतमंत्रः ॥ ॥ मूलं ॥ अन्नस्तेजोव
 हितो ज्ञो हकी कृत्य मिति प्रभात ॥ त्रिबोदेव्यपरिश्राम्य कुल
 दीपं नियेदयेत् ॥ समस्तवक्रवक्रैरि युनंदेयितयं वि
 के ॥ आरात्रिकमिदं देवि गृहारा न नृसिद्धये ॥ इदं
 मारात्रिकं वृत्ता ग्निदेवतं मं ॥ त्रिवेद्यामिनमः ॥
 वक्र ॥ ॥ ततो दीपकाली चरु गृह्यवक्ष मातमंत्रे

रास्थिकारं कुर्यात् ॥ ॥ मूलं दोतेजो एकता कृत्वा कृ
तकर्मदहे क्वं ॥ गदालु भक्षयेद्दीपं मोक्ष मार्ग प्रकाश
कम् ॥ सर्व विघ्नोपशमनं सर्व दुःख निवारणं ॥ सर्व
पतापसमनं के मदीपं समुद्धरेत् ॥ ॐ प्रकाशकाश
हस्ताभ्यां नवलं चो निविशुवा ॥ धर्मा धर्मो विद्महे
ज्योतिर्मागो प्रजुहोम्यहं स्वाहा ॥ ॥ गतद्वयान्न शयनं ॥

श्रीमच्छुद्धेश्वरप्रविवरानन्दामृतप्रावितं क्षेत्रा
न्नीश्वरयोगिनीगरा मृता सिद्धिः समाश्रितम् ॥ आन
न्दारविष्णुनहात्मकनिर्देश श्रीमात्रेश्वरामृतं । तत्पी
तं प्रथमं समस्तजगतां सोत्पायवन्दामहे ॥ ॥ ॐ अ
मृतो अमृतो द्रव्ये अमृतवृषिणि अमृतो द्रवाय स्वा
हा ॥ १ ॥ ॥ मूलं ॥ मूलं सर्व तेजो युतं चारं जाग्रतं

कोलरुपिणी॥ तत्त्वं ज्ञात्वा विदोऽसुक्तं प्राणाग्नेः प्रजुहोम्यहं ॥ ॥
पञ्चशेवनं ॥ सद्यः प्राभानियतकलापकहितं कोलरुहं
द्योतनं चन्द्रोपेन्द्रमुहउशंभुवरुणो वृक्षादिभिश्च वि
तं ॥ व्यातं देवमग्नौः परं मुनिगते मीक्षितार्थं निसर्गसु
वन्दे पात्रमहं द्वितीये मधुना चात्मा प्रबोधक्षमम् ॥ तं
पृथ्वीतत्त्वं जुहोमि स्वाहा ॥ २॥ ॥ जलचर ॥ मूलं कात

रूपसामुत्पन्नं मत्स्यं त्वग्धातुरूपकं ॥ अग्नौ पञ्चास
कंचैव पञ्च स्वाहा संजुहोम्यहं ॥ ॥ पात्रं ॥ मयं मीन
रहावहं हरिहरवृक्षादिदेवार्पितं मुद्रामेधुनधर्म
कर्मसुखदं क्षारान्नतिक्ताश्रयं ॥ मं तं मूकं मेधुने
तमस्ते ह्यमन्त्रेद्येयुतं सर्वदेवमुनीश्वरैस्त्रिज
गतां पञ्चरत्नीयं नमः ॥ चं जलतत्त्वं जुहोमि स्वाहा ॥

३॥ ॥ शेषर ॥ मूलं शेषरं शृङ्गवेदं चरसंधानु विराजि
 तं ॥ आत्मा मे प्रजुहोम धिउ जुसः शेषरं स्वाहा ॥ ॥
 पात्रं ॥ श्रीमन्मन्त्रं त्वपात्रमेवितरसं मृत्पुं जयजयते
 आत्मा तं ध्यानं राजवशपररां दिव्याङ्गं वा रा जितं ॥
 शक्तिं ह्येति जपंति मोहं हितं सा भूत्करं शेषं भव्यं
 त्रराजसहितं पात्रं चतुर्थं नमः ॥ रवद्वितत्वं जुहोमि

स्वाहा ॥ ४ ॥ ॥ रेखर ॥ मूलं त्वकुरुष्मा स्थिमेदं
 त्विभुक्तं वातुस्वरूपः ॥ तस्मात्संभक्ष्यमप्यप्यस्य
 मेन्द्रियजुहोम्यहं स्वाहा ॥ ॥ पात्रं ॥ मूलं देहस्थारिवल
 देवतागजमुखाक्षेत्रा क्रियाभरवा योगिगोवदुका
 श्वेयक्षपितराभूता विशाखागुहा ॥ अन्ते भुक्त्वा रेख
 चरादिशिवरावेतात काश्चेत् का साष्टास्युः कुल

उत्तपिपलः पात्रं सदापंचमं ॥ यं वा यत्तु पुंजु हो मिखाहा
॥ ५ ॥ ॥ सर्व्वरु ॥ मूलं अंनदः प्राणादन्वैव प्राणा आ
नेन जायते ॥ कालिकाति महा कालिकाति चैरु न क्षरा इत्था
हा ॥ ॥ पात्र ॥ आकाश दिवि भावते तु पुन न तत्वा त्म
कं सुन्दरं पातुर्वेद सुधार साद्धि अदितं सातत्रयं वा
दिता ॥ मूर्ति शुभागमं प्रसन्न ददनं शक्ति स्वयं भू

पुन फेला स्वर्गा न यं पवित्र जगतां यश्च परं योगिनां ॥
हं आकाशतः पुंजु हो मिखाहा ॥ ६ ॥ ॥ अष्टज ॥ मूलं
विद्वि विद्वि सर्व्व कारिणि ॥ स्वाहा ॥ ॥ पात्र शेवतं ॥ मूलं
मूर्ति कृतं न कृतं कालि मूलं द्धारं मह शोधधं नुक्ति मुक्ति
प्रसन्नः शक्ति वदनं स श्री त्मकं सत्रयं ॥ वरुणो वाडु शहा
दश दश कला शान प्रद सश्वरं पात्र तार सयं पवित्र

अगतां वश्यं परं योगिनाम् ॥ ३॥ तत्त्वाय स्वाहा ॥ ७ ॥ ॥
 अर्द्धपाद ॥ मूलं मथ २ स्वाहा ॥ पात्रं सेवनं ॥ तत्त्वं तत्त्वगुराणां
 सगुराणां भवतीत्युगलं हीनं गतं निर्मलं मत्पु सर्वत्र राव
 रं तिस्रुधिया स्वाहा मनुष्योप्यते ॥ विद्याविद्यमयं परा
 विजयतामानन्दमेवैव्यतां पात्रं तार मयं पवित्रजग
 तं वश्यं परं योगिनाम् ॥ ३॥ विद्यातत्त्वाय स्वाहा ॥ ८ ॥ ॥

कथं ॥ मूलं ज्यत २ स्वाहा ॥ पात्र ० ॥ अतिपिशितपुरंधी
 नोगा पूजा परोहं बहुविधं कालमार्गं रंभ संभा विता
 हं ॥ पञ्चजनविमुर्या भैरवो संश्रितो हं गुरुचरणां
 सोहं भैरवो हं शिवो हं ॥ हं शिवतन्मं ज्ञोति स्वाहा ॥ २ ॥
 ॥ ॥ इति पात्रं वन्दनं कृत्य ॥ त्यागात्परावति विसृज्य ॥
 फलशोदकं देवोत्समर्षणां कृत्य ॥ सगुराणां दिक्चंदना

देवीमात्महीनं विभाव्य परा पुद्रया मुह्यता तर्पणं ॥ ॐ इ
तः पूर्वप्राणापुद्गिदेहवन्मोक्षिकारतो जाग्रत्स्वप्नसुषु
प्त्यवस्थासु मनसा पाचा कर्मणा हस्ताभ्यां यश्चा मुदर
राशिश्चायत्स्मृतं यदुक्तं यत्कृतं तत्सर्वं ब्रह्मार्थं सा मस्तु
॥ ॐ गंगामदीयं च सकलं कीं जाया मा लिकाये सम
र्पयामि नमः त्वाहा ॥ ॥ देवी विसर्जयेत् ॥ ॐ गङ्गा

परं त्यागं स्वस्व त्यागं परेश्वरि। यत्र ब्रह्मा दस्यो देवास्तत्र
गच्छते मे हृदि ॥ संहारमुद्रया यंत्रस्थं पूषं ॥ ॐ त्वाद्या
यद्दृशान दिशि क्षिपेत् ॥ ॐ श्रीं विमलपुष्पाक्षयनमः ॥ ॥
यत्र तं माय्यं शिर शिखिपयेत् ॥ ॥ तत्र कलशोदकान्
समाजनेत् कृत्वा अग्निं षष्ठं गृहीयात् ॥ गंगा पुष्कर नर्मदा
च यमुना गोदावरी गोमती सिन्धु सागर कोशिकी मह

नदीकावेरी वाराणसी ॥ रे वा सेतु सरस्वती प्रभृतयो
पुष्पाक्ष भारोडादरी तीर्थस्नान सह सुकोटि फलदं श्रीव
क्रपादोदकं ॥ ॥ चन्दनसिन्दुरादिकं सर्वं गृहीयात् ॥ ॥
ततः श्रीफलशंशा तपे समर्प्य ॥ ॥ कीरभोज्यं कारयेत् ॥ ॥
मूलां चक्रं श्रीप्रथमे शुभं दयितया दत्तं च पंचादिभिः
॥ किंचिच्च वहारत्तपःकृत्वा दशाक्षस्यै समावेदितं वा

मेशु द्विविशुद्धिपात्रकरणां पारोति ध्यायात्मके वंदे हं
जगतां पवित्रकरणां त्वानन्दसंवर्द्धनम् ॥ ॥ ॐ ह्रीं *
ररापपात्रं मधोपूरां ददाति मधव्यो सानीति एकधा
यात्मके वंदे हं जगतां पवित्रकरणां त्वानन्दसंवर्द्धनम् ॥
॥ ॥ ॐ ह्रीं ररापपात्रं मधोपूरां ददाति मधव्यो सानीति
एकधा धुंजराडपहसति एकधा वयजमान आमुक्तेजो

दयाते ॥ ॐ जुहोमि परमानन्दं हेतुविव्रलसाधका वा
मायामानदिनीत्यं सुखाभवत्वं सुखामव ॥ ॥ इति जुति ॥
इदं पवित्रं मृतं पितृमिभवं भेषजम् ॥ पशुपाशमुद्धेदं
कारणं भैरवोदितम् ॥ चित्रः स्वातः सोम्याश्चरादानन्द
मशेषतः ॥ तन्मयं त्वा च भाषानी भावाश्चात रितारये ॥
स्वस्वतं च विकाराय सुरशस्तेन पीयते ॥ तस्यादि

मां सुरगंदेवी पूर्णा हरा जुहोम्यहं ॥ ॥ इति शुद्धि ॥ ॥
ततो सधर्मममुपादाय ॥ मूलं ॥ आधारभुजगाधिरा
जवलनयः पात्रं मेही मराडलं मद्यं सप्तसमुद्रवारिपि
शितं पादुकादिदुर्दत्तनः ॥ तोहं भैरवमर्चयेत्युत्तिदिनं
तारागणैरक्षकैरादित्यप्रमुखैः सुरासुरगणैराग्याव
रैः किंकरैः ॥ ॐ हिरण्यमयैर्नयैर्नयैः सैतस्यापिहितं

मुरवं ॥ योसावादिपुस्तपसासायहं स्वम्यनत्वा हा ॥ १ *
 ततोष्टोपुरोडासान्गर्होत्या ॥ मूलं वृत्तात्तां शेषदुर्गागुरुव
 दुक्कगराभैरवाक्षेत्रपालावेनालादित्यरुद्रागृहवसु
 मुनयः सिद्धयोग्यकाद्याः ॥ भूतागन्धर्वविद्याभरत्र
 षिपितरः किंपरायक्षनागायोगीशाश्चरणाकिंपुरु
 षमुनिसुराश्चक्रगाः पातुसर्व ॥ १ ॥ रक्षां यद्गुडाकिं

रणीत्यवगतारक्तस्थिताराकिरीला किंपरः पललस्थि
 ताहिरसामेदस्थिताकाकिनी ॥ पूषत्यस्थिगसाकि *
 नीप्रतिदिनं हाकिन्पथोमज्जागाशुक्रं रक्षतुयाकिनी
 परिवृतं पुष्यायुधं त्रीवितं ॥ २ ॥ स्वर्गव्यामृत्समीररा
 रसतलेनलजालेक्ष्मादिक्षुकोरास्थितासूक्ष्मास्थि
 गताऽथयीठजनितास्वक्षेत्रजामंत्रजा ॥ योगस्थासह

जाञ्चपद्मः प्रणिता श्रीफालिका मेत्रजा योगिनो वहाता स
 वाञ्छमुदिता स्ता सर्वदा पातुनः ॥३॥ पिवन्तु देवता सर्व
 श्रीचक्रिया व्यवस्थिता ॥ पीठजाक्षेत्रजाः सर्वममदेह
 व्यवस्थिता ॥४॥ नन्दतुलाधिकाः सर्वविनश्यतु विद्
 धकाः ॥ अवस्थाशा भवीमि तु प्रसन्नोऽस्य गुरुः सदा ॥५॥
 पात्रं स्वीकृत्य पात्रं क्षालयित्वा पिबेत् ॥ गंगा पुष्क

रति ॥ पात्रमधोमुखीकृत्य भूमौ ह्रींकारं विलिख्य वामा
 नातिक्रिया संमार्जनं कृत्या भूमौ तिलकं कुर्यात् ॥॥
 यं यं स्मृतिहृत्तन यं यं पश्यति चक्षुषा ॥ सदा सन्मतां
 समार्याति यदि शक्रसमो भवेत् ॥॥७॥ ह्रीं ह्रीं ह्रीं ह्रीं
 ह्रीं मातङ्गवरी नृप्यतु ॥ इति वीरभाजानम् ॥
 तदुद्धिष्टं पात्रं संस्थाप्य वक्षना रात्रौ मेरुगोचि ह्रीं सं

पूज्यवित्तर्जयेत् ॥ ॥ इति आचार्यः ॥ पूजापद्धतिः ॥
तत् २२४ भाद्रपद १० ६ श्री ५ माधर राजसर्ग राणा
लित्यितं अभ्यु ॥ ॥

दीपस्य तेजोसि अग्निवर्क्योति ॥ अन्नपते ॥ ॥
कोट्याः ॥ ज्ञानवेदसे ॥ स्वेचरस्य तव वायु ॥ ॥
अचरस्य ॥ पृथिवीशदता ॥ जलचरस्य ॥ यरु रा

स्थानं भनं ॥ अंम्यकं यजामहे ॥ शेषरस्य अग्निमूर्द्धा ॥
सर्वचरे ॥ शिवात्मनामोशिः ॥ नमः शंभवाय च ॥ ॥
अस्माकमिन्द्रेति ॥ ॥ अराजस्य ॥ प्रलयज्ञानो ॥ ॥
अं दुपाकस्य ॥ अं पावकानः ॥ ॥ कचस्य ॥ प्रतदि
धुनपरे ॥ ॥ समयात्तकस्य ॥ नमः शंभवाय च ॥ ॥
इति नवकच शोधनं ॥ ॥ ॥ ॥



209
Pinda vidli.
H. veta

आमरकान्ति
2270 I

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥